॥ श्री ॥

तिब्बे हैवानात

अर्थात्

पशु चिकित्सा

—※—

जिसमें मज़ामीन बाबत हिफ़्ज़ सिहत, व इन्तज़ाम मवेशियान वग़ैरह हैं

और

जिसको श्री महाराजाधिराज श्री १०८ श्रीमान् मेजर-जनरल सर माधवराव साहब सिंधिया, आलीजाह बहादुर, जी. सी. एस. आई., जी. सी. व्ही. ओ., डी. सी. एल., एल. एल. डी., ए-डी. सी. आदि ने बनाया.

—※—

सन् १९१५ ई०

—※—

गवालियार.

आलीजाह दरबार प्रेस में छपी.

पहलीबार २०,००० जिल्द. (कीमत ॥=)

॥ श्री ॥

समर्पण

यह पुस्तक

कैलासवासी तीर्थरूप श्रीमान् महाराजाधिराज श्री १०८

जियाजीराव साहब सिंधिया आलीजाह बहादुर,

जी. सी. बी., जी. सी. एस. आई. इत्यादि,

तथा

मातुश्री **महारानी गंगाभागीरथी सख्याराजा सिंधिया साहबा,** सी. आई.

की सेवा में

जिनके पुण्य प्रभाव से यह बनी

भक्तिपूर्वक समर्पण की जाती है.

माधवराव सिंधिया.

तिब्बे हैवानात.

दीबाचा.

बाब १.

बाब २.

मारडालने वाली छूतवाली बीमारियां.

बाब ३.

बाब ४.

फेफड़ों की मशहूर बीमारियां.

बाब ५.

बाब ६.

पट्ठों की बीमारियां.

बाब ७.

पांव की बीमारियां.

लंग.

बाब ८.

उन बीमारियों के बयान में जो हैवानात के पेशाब करने की जगह से व बच्चा पैदा होने की जगह से तअल्लुक़ रखती हैं:—

बाब ९.

बाब १०.

आंखों की बीमारियां.

बाब ११.

पिचकारी—पाखाने के रास्ते से जानवर को दवा देने का एनीमा।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

तिब्बे हैवानात.

—※—

दीबाचा.

मवेशियान से गांव में फ़ायदे.

१. गांव में मवेशियान भी एक आम्दनी के ज़रिये हैं. इनके रखने से घर के कामों में भी अलावा और कामों के ऐसी मददें मिलती हैं कि जिनके कारण ज़रूरत से ज़ियादा पैसा सर्फ़ करना नहीं पड़ता, मस्लन घर का दूध, छाछ, मक्खन, घी, कंडे वग़ैरह.

इलाज मुआलजा.

२. लेकिन इसके साथ यह ज़रूरी है कि उनके इलाज मुआलजे की और दीगर चंद बातों की वाक़िफ़यत इन्सान को होनी चाहिये. अगर किसी के समझ में कोई बात जो इसमें दर्ज है न आवे तो वह पहिले ज़िले में जाकर जहां कि असिस्टेन्ट वेटेरिनेरी ऑफ़िसर रहता है उससे समझले. बिला समझे बूझे हरगिज़ इलाज इस किताब के बमूजिब न करना चाहिये, क्योंकि यह एक आम कहावत है कि बग़ैर गुरु विद्या नहीं आता.

चन्द आम तरीक़े.

तरीक़ा हुकना.

हुकना क्या है.

३. हुकना देना उस दवा देने को कहते हैं जो पिचकारी के ज़रिये से बीमार जानवर के कोठे में पाखाने के रास्ते दी जाती है.

हुकने की दवा बनाने की तरकीब.

४. हुकने की दवा बनाने की यह तरकीब है कि पानी गरम दो सेर लेकर उसमें इतना साबुन मिलाया जावे कि पानी में झाग पैदा हो जायें. तब उस पानी में एक छटांक सरसों का तेल मिलाकर इस दवा को पिचकारी में भरकर पाखाने के रास्ते जानवर को देना चाहिये.

अगर पिचकारी न मिले तो उसके बनाने की दूसरी तरकीब यह है कि एक बांस की लंबी पोली पंगोली जो उंगली से दुचंद मोटी हो या हुक्के की नै जिसका सिरा पीछे का गावदुम हो उसके दूसरे सिरे पर चमड़ा लेकर उसकी थैलीसी बनाकर उसको सुतली से कसकर अच्छी तरह बांध दो ताकि दबाने पर पानी बाहर न निकल जावे.

पेट के अन्दर दवा पहुंचाने की तरकीब.

५. जिसक़दर पानी थैली में हो उसे इस ज़र्ये से अन्दर जानवर के पहुंचाओ.

पहिले दवा बनाओ और फिर पिचकारी में भरो जिसके बाद पिचकारी का मुंह छै अंगुल तक जानवर के पाख़ाने की जगह के अन्दर डालकर पिचकारी हो तो उसके डंडे को अंदर दबाओ; न हो तो इस थैली को दबाओ ताकि उसके दबाव से नाली के ज़र्ये दवा चली जावे. दबाना आहिस्ता आहिस्ता चाहिये नहीं तो जानवर को तकलीफ होगी. अगर एक दफ़े कुल मौताज न दे सको तो ठहर कर दूसरी दफ़े ऐसे ही करो ताकि कुल दवा पेट में चली जावे.

हुकना किस वक्त दिया जाता है.

६. हुकना जानवर को ऐसे समय दिया जाता है जब कि जुल्लाब देने को वक़्त न मिले या जुल्लाब की दवा अपना असर न करे, या उस वक़्त दिया जाता है जब कि पेट का मैल फ़ौरन ही निकालना मुनासिब समझा जावे ताकि दर्द बोगमा या शूल वगैरह फ़ौरन ही बन्द होजावें. यह दर्द उसी वक़्त होता है जब पेट में गांठें पड़ जाती हैं या हाज़मे में फ़र्क़ आजाता है.

तरकीब भपारा.

तरकीब भपारा.

७. जब किसी दवा का देना बज़रिये भाप के नाक के रास्ते से पहुंचाना ज़रूर हो तो उसको भपारा कहते हैं. तरकीब उसकी यह है :-

एक बरतन में खूब गरम पानी भाप निकलता हुआ लेकर उस पानी में थोड़ासा घास या भुस डालके उसपर वह दवा जिसका भपारा देना हो छिड़के, और फिर वह बरतन जानवर के नथनों के क़रीब रखकर चारों तरफ़ से कम्मल या कोई और कपड़ा लपेट दे ताकि वह भाप बाहर न निकलसके और पानी भी जल्द ठंडा न हो जाय.

भपारा देने की तरकीब।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

धुनी देने की तरकीब ।

चित्रशाला प्रेस, पूना ।

घोड़े को दवा पिलाने की तरकीब।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

मवेशी को दवा पिलाने की तरकीब।

चित्रशाला प्रेस, पूना।
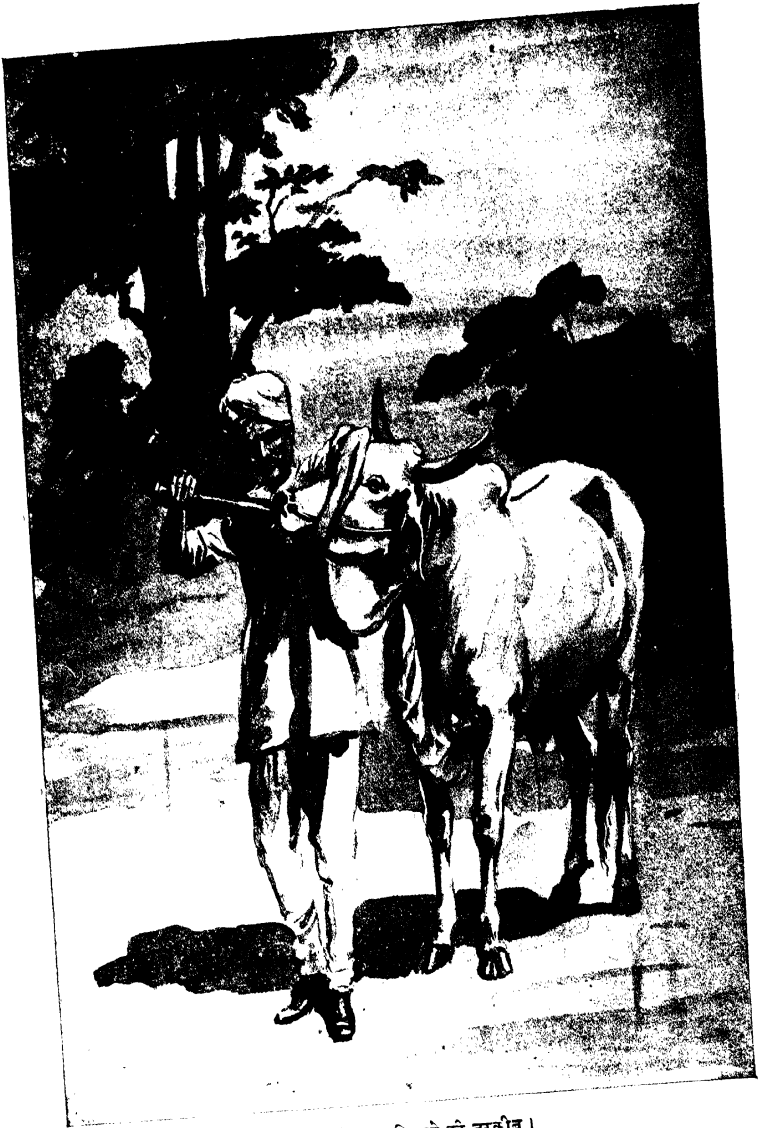
आसान भपारा काफ़ूर का है जोकि आसानी से तैयार होसकता है. इसके लिये काफ़ूर एक पैसे भर और पानी बाल्टी भर चाहिये.

तरकीब अर्क़ पिलाने की.

८. जब कोई दवा जानवर को पतली पिलाई जावे तो उसमें बड़ी एहतियात करनी चाहिये ऐसा न हो कि दवा नरख़रे और फेफड़े में चली जावे जोकि कारण ख़राबी का होगा. तरकीब दवा पिलाने की यह है.

दवा पिलाने में एहतियात.

९. दवा पिलाते वक़्त पहिले एक शख़्स जानवर की बाईं तरफ़ खड़ा होकर उसका सिर ऊंचा उठाले और दूसरा शख़्स दाईं तरफ़ खड़ा होकर दहिने हाथ में दवा का बरतन ले (जो नाल या बोतल होगी). बायें हाथ से जानवर का होंट खींचकर दवा की बोतल या नाल को मुंह में देकर धीरे धीरे अर्क़ को पिलावे. अगर दवा पिलाते वक़्त जानवर खांसना चाहे तो उसको बिलकुल छोड़ देना चाहिये ताकि वह अपना सर नीचा करके अच्छी तरह खांसले.

दवा पिलाने की तरकीब.

१०. अलसी को कूटकर उसमें पानी डालके चूल्हे पर चढ़ा दिया जाय और जब कि वह अलसी खूब पक जावे और गाढ़ी पतले दलिये के मुवाफ़िक़ होजावे तो उसे एक कपड़े पर फैलाकर उसीके भाप से जिस जगह कि सेंक करना है सेंके और बाद उसीको गरम गरम (जितना कि जानवर सह सके) बांध दिया जावे. इस बात का ध्यान जरूर रखना चाहिये कि इतनी गरम भी पुल्टिस न हो कि जिससे चमड़ी जल जावे. इसी मुवाफ़िक़ दिन में दो तीन दफ़े सेंकाजावे. अक्सर लोग पुल्टिस के बजाय नीम, बकायन, और समालू की पत्तियों का भुरता भी बांधते हैं.

पुल्टिस.

तन्दुरुस्ती के क़ायदे.

११. बीमारी की कमी या रोक के लिये उसके आम उसूलों का जानना जरूरी है जिनकी एहतियात न करने से बीमारियां फैल जाती हैं.

बीमारी की रोक के लिये क़ायदे तन्दुरुस्ती की पाबन्दी जरूरी है.

नोट:—पुल्टिस उस लपसीसी चीज को कहते हैं जिसका पकाके सेंक किया जावे.

भपारा और पुल्टिस में इतनाही फ़र्क़ है कि बशक्ल पुल्टिस दवा को पकाया जाता है और भपारे की शक्ल में दवा को भूबल में खुद गरम किया जाता है.

पुल्टिस व भपारा ज़्यादातर बंद चोट जो आती है उसको सिहत पहुंचाने में इस्तैमाल किये जाते हैं. इसके इस्तैमाल से वह सूजन उतर जाता है जो चोट से आया हो, या खून किसी जगह जम गया हो तो वह तहलील होजाता है. सेंकने से अगर तहलील न हो तो वही खून सेंक से पीप होजाता है, जो अपने आप निकल जाता है या जिसे शिगाफ़ देकर निकाल देते हैं.

सफ़ाई की ज़रूरत.

१२. सफ़ाई इन्सान व हैवानात दोनों के लिये ज़रूरी है, मगर इसका बहुत कम ख़्याल किया जाता है. जिन जगहों में मवेशियान बांधे जाते हैं वे जगह बिलकुल गंदी रहती हैं. वहां जानवर कीचड़ या गोबर में खड़े रहते हैं, उनका जिस्म लीद, गोबर और पेशाब से भरा रहता है, वे कलीलियों व बगों से और दीगर क़िस्म के मैलेपन से भरी रहती हैं. वे मकान जिनमें जानवर रखे जाते हैं बिलकुल छोटे और बंद होते हैं. उनमें हवा अच्छी तरह नहीं जासकती और न ख़राब बदबूदार हवाएं उनमें से निकल सकती हैं. इन्हीं कारणों से बीमारी होती है.

ऐसी जगहों में जानवर के रहने से उनकी तन्दुरुस्ती. पैदायश (दूध वग़ैरह) जैसे कि होनी चाहिये वैसी नहीं होती.

जानवर भी प्राणी है जितनी सफ़ाई व साफ़ हवा इन्सान को दरकार है उतनी ही जानवर को भी है.

जानवरों के रखने की जगह.

१३. उमूमन जानवर के लिये जगह ऐसी बनानी चाहिये जिसमें ये बातें हों:—

(१) मकान (अगर हो तो) हवादार हो

(२) कीचड़ या किसी क़िस्म का मैलापन उस जगह न हो.

(३) ऐसी जगह न हो जिसमें सीड़ हो.

(४) चौरस सीधी ज़मीन पर जानवर खड़े रहें और पीछे की तरफ़ कुछ ढाल रहे ताकि पेशाब इकट्ठा न होसके और नाली के द्वारा निकल जाय.

जानवरों की जगह पर आग जलाना मुफ़ीद है.

१४. ऐसी जगह में कभी कभी आग भी जलादी जाया करे तो अच्छा है. इससे मक्खी, मच्छर, कलीलियां, बगें और दीगर क़िस्म के कीड़े मकोड़े व ज़हर जो उस जगह रहकर जानवरों को बीमार करते हैं या तो चले जाते हैं या नष्ट होजाते हैं.

चारा मुआफ़िक़सर और पानी अच्छा दिया जावे.

१५. जानवर को चारा अच्छा दिया जावे, और पानी अच्छा पिलाया जावे, न कि गढ्ढों का जो सड़ा हुआ होता है.

जिस वक्त ख़ुराक दीजावे यह ज़रूर ध्यान रखना चाहिये कि वह मुवाफ़िक़सर दी जावे; यानी न ज़्यादा न कम. इन दोनों से नुक़्सान है; मस्लन ज़्यादा ख़ुराक देने से बदहज़मी का होना और कम देने से निर्बल होजाने का संभव है.

जानवर से मेहनत काफ़ी लेनी चाहिये.

१६. जानवर से मेहनत भी काफ़ी लेनी चाहिये ताकि जो कुछ वह खाय वह हज़म होजाय.

मौसम का असर व छूत की बीमारियां.

१७. तन्दुरुस्ती का ज़्यादातर दारोमदार मौसम पर है. अगर हर मौसम में एकहीसा इन्तज़ाम रहे तो यह भी मुफ़ीद नहीं, बल्कि नुक़्सान पहुंचता है. इसवास्ते मौसम की सर्दी व गर्मी का ख़्याल रखना ज़रूर है. अगर गर्मी का मौसम हो तो जानवरों को लू व तेज़ धूप से बचाना चाहिये. ऐसी जगह जानवर को चराना चाहिये जहां साफ़ पानी के मिलने का सुख हो और चारा भी अच्छा मिले. अक्सर देखा गया है कि लोग गर्मी के मौसम में वह घास जो बरसात में भीगकर गल जाती है उसे खिलाते हैं. यह भी जानवरों की तन्दुरुस्ती में फ़र्क़ लाने का कारण होता है. शुरू बरसात में नया चरा खाने से बहुतसे जानवरों को ज़ुकाम खांसी, बुखार और फेफड़े की बीमारियां होजाती हैं. अलावा इसके इन मौसमों में छूतवाली बीमारियां (जो एक से दूसरे को व दूसरे से तीसरे को लगकर वबा की शक्ल में पैदा होती हैं) फैल जाती हैं. इसवास्ते मौसम का पूरा लिहाज़ करना चाहिये. बरसात में जो घास उगता है उसके खाने से जानवरों को जहांतक मुमकिन हो बचाया जावे और छूतवाली बीमारियों

का भी पूरा पूरा ख़्याल रक्खा जावे. ये बीमारियां अलावा बरसात के और मौसमों में भी होती हैं. इनकी पहचान के बारे में जो कुछ बातें याद रखने क़ाबिल हैं वे आगे लिखी जावेंगी. यहां सिर्फ़ इस क़दर बताया जाता है कि जब किसी गांव में रोग फैले तो क़रीब के गांववालों को चाहिये कि वे अपने मवेशी उस गांव के मवेशियों से न मिलने दें और अगर होसके तौ खुद भी वहां न जायें और न उस गांव के आदमियों को अपने गांव में आने दें: क्योंकि यह मर्ज़ न सिर्फ़ बीमार से ही तन्दुरुस्त को छूत के ज़र्ये से होता है, बल्कि उस बीमार से तन्दुरुस्त जानवरों में दीगर आदमियों के या चीज़ों के ज़रिये से भी पहुंच सकता है, यानी उस आदमी के ज़रिये से जो बीमार के पास रहता है या उस सामान के ज़रिये से जो बीमार के पास रहता है या काम में आता है. मक्खी, मच्छर, चील, कौवे, कुत्ते वग़ैरह जो बीमार जानवरों को काटते और उनका गोश्त खाते हैं वे भी बीमारी को तन्दुरुस्त जानवरों में पहुंचा के फैलाते हैं. बहुतसी बीमारियां ऐसी हैं जिनका ज़हर हवा से उड़कर भी बीमारी फैला सकता है. इसवास्ते लोगों को चाहिये कि उस गांव और जंगल से अपने जानवरों को अलहदा रक्खें जिसमें बीमारी फैली हो, और किसी ऊंची साफ़ जगह में दूर लेजाकर उनको चरायें, और गांव के ढोरों में से जहां रोग फैलरहा हो बीमार ढोरों को गांव से बाहर निकालकर ऐसी जगह रक्खें कि जहां उस गांव के तन्दुरुस्त जानवर न जाते हों. सिवाय इसके इन बीमार जानवरों का जो गोबर, लीद व चारा वग़ैरह इकट्ठा हो उसको वहीं एक जगह जमा करके जला देना चाहिये और उस आदमी को जो बीमार जानवरों के पास जाता हो यह भी चाहिये कि बग़ैर गरम पानी से नहाये और दूसरे साफ़ कपड़े पहने, तन्दुरुस्त जानवरों के पास न जाये और न छूवे. अगर ये बीमार जानवर मरजायें तो इनकी लाशों को छै फुट गहरे गढ़े में बग़ैर चमड़ा उतारे गड़वा देना या जलादेना चाहिये. बीमार जानवर का चमड़ा हरगिज़ न उतारा जाय, क्योंकि चमार जब खाल उतारते हैं तो उस खाल से भी गांव में बीमारी फैलती है, और जब खाल उतार ली जाती है तो उसका मांस, हड्डियां वग़ैरह वहीं पड़ी छोड़ देते हैं जिन्हें कुत्ते, चील, कौवे वग़ैरह खाकर दूसरे गांव में जाके बीमारी फैलाते हैं. जब गोश्त चमड़ा वग़ैरह गांव के करीब पड़ा रहता है, तो तन्दुरुस्त जानवर वहां चलते फिरते और इकट्ठे होते हैं और उस तमाम गोश्त वग़ैरह को

सूंघते हैं जिससे एक दूसरे को बीमारी हो जाती है, इस भूल और ला-परवाही का यह नतीजा होता है कि मुल्क में बहुत रोग फैलता है और गांव जानवरों से खाली होना मुमकिन होजाता है. ये बातें ऐसी हैं जो यकायक किसीके समझ में न आवेंगी बल्कि इनके पढ़ने वाले या सुनने वाले हंस देंगे. लेकिन अगर इसके बमूजिब लोग चलेंगे तो उनको अनुभव से अपने आप मालूम होजावेगा कि आया ये बातें बेसूद हैं या कैसीं.

तारीफ़ मर्ज़ यानी बीमारियों का बयान.

बीमारी की क़िस्में.

१८. बीमारियां दो क़िस्मों की होती हैं, एक तो वे बीमारियां जो छूत के होजाने से फैलती हैं, और एक से दूसरे को लग जाती हैं, जिनको देहाती ज़बान में रोग कहते हैं, यानी, फड़सूजन, गला फूला, माता, खुसीटा वग़ैरह. दूसरी क़िस्म की वे बीमारियां हैं जो किसी वजह से एक ही जानवर को हो जाती हैं जैसे बुख़ार, खांसी, दस्त, अफरा, दम, बोगमा (आंतों की सूजन Enteritis) वग़ैरह.

दवा व खास खुराक का देना.

दवा व खास खुराक.

१९. दवा व परहेज़ी खुराक तब ही तक देनी चाहिये जबतक बीमारी रहे.

पहले व दूसरे बाब में उन बीमारियों का ज़िक्र किया जाता है जो छूतवाली हैं.

छूत किस तरह लगती है.

(१) खराब पानी पीने से और खराब खानों के खाने से; यानी जिन पानी या खानों में ज़हरीले छूतदार कीटांशु (Bacilli) होते हैं.

(२) छूतदार बीमारी वाले जानवरों के साथ ताल्लुक़ होने से.

(३) उन आदमियों या चीज़ों के ज़रिये से जो बीमार जानवर या उनकी छुई हुई चीज़ों को छूते हैं.

छूतदार बीमारी का असर दूसरे तन्दुरुस्त जानवर को मक्खी के द्वारा भी हो जाता है जो मरे हुए या छूत के बीमारी से मुब्तिला हुए जानवरों के बदन से ज़हर को लेजाती हैं.

बाब पहला.

उन छूतवाली बीमारियों के बयान में जो कम ख़तरनाक हैं.

१.—खुसीटा (Foot and Mouth Disease).

१. बीमारी का बयान—यह एक छूत की हवा से उड़कर लगने वाला बुखार है. इसको इंग्रेज़ी ज़बान में फुट एन्ड माउथ डिज़ीज़ और आम लोगों में मुंहखुर और देहाती लोगों में खुसीटा कहते हैं. यह वबा के तौर पर मुल्क में फैल जाता है और बहुत सी गाय, बैल व भैंसों को बीमार करदेता है. यह बीमारी हद दर्जे की छूत रखनेवाली है मगर ऐसी नहीं है कि जिससे जानवर मर जाय. इससे बीमार जानवर तकलीफ़ उठाकर अच्छे हो जाते हैं.

२. सबब—इस मर्ज़ का सबब एक ख़ास क़िस्म का ज़हरीला माद्दा है जो जानवरों के बदन में पहुंचने से फेफड़े वग़ैरह को और ख़ून को ख़राब कर देता है.

३ पहचान—मुंह में आबले और खुरों में चटें, मुंह चलाना, और मुंह से झाग व राल गिराना, पैरों को चाटना और झटकना, तकलीफ़ से चलना, कम खाना पीना.

४. एहतियात—अव्वल ऐसी बीमारी के बीमार जानवर तन्दुरुस्त जानवरों से और ऐसे जानवरों से कि जिनके बाबत शुबह होजाय कि इन्हें भी इस बीमारी का असर होगया है अलहदा कर दिये जावें. इस तरह अलहदा किये हुए जानवरों के भी दो दर्जे किये जावें यानी अव्वल वे जो मर्ज़ में मुब्तिला होगये और दोयम वे जिनके निस्बत बीमारी के लगजाने का शुबह हो और जो इसी सबब से ज़ेर निगरानी इलाज करनेवालों के हों.

५. ख़ुराक—जानवर को नरम खाना दिया जाये, क्योंकि मुंह में छाले होने के सबब से सख़्त खाना नहीं खाया जासकेगा.

नरम गिज़ा इस क़िस्म की होनी चाहिये—आटे की कांजी, अलसी और चांवलों की लपसी, चोकर में नमक मिलाकर हरी घास वग़ैरह. घास ऐसी जगह से लाई जावे कि जो मैली न हो और जहां और कोई जानवर मरा पड़ा न हो.

६. नीचे लिखे हुए नुस्ख़ों में से किसी एक का इस्तेमाल करना चाहिये. इलाज.

(१) फिटकरी १ तोला, गरम पानी आधसेर, दोनों को मिलाकर बीमार जानवर को कुल्ली कराई जावे, मगर यह ध्यान रहे कि जानवर इसको पी न ले, क्योंकि दवा सिर्फ़ मुंह को अन्दर से साफ़ करने के लिये है. यह दिन में दो तीन दफ़े करना चाहिये. कुल्ली कराने का नुस्ख़ा.

(२) सुहागा तीन माशे, फिटकरी तीन माशे, सिर्का आधी छटांक, पानी एक सेर. इन सब को मिलाकर कुल्ली कराई जावे. कुल्ली कराने का दूसरा नुस्ख़ा.

पैरों के घाव.

(३) पैरों के घावों को गरम पानी से धोकर नीचे लिखे हुए नुस्खों में से किसी नुस्खे को काम में लाया जावे:—

नुस्खा अव्वल.

(४) तारकोल(Coaltar) एक छटांक, चर्बी आठ छटांक, सादा तेल दो छटांक, सबको मिलाकर मरहम (मल्हम) तैयार करके घावों पर लगाओ.

नुस्खा दूसरा.

(५) कपूर एक माशा, तारपीन का तेल आधा तोला, मीठा तेल चार तोले. सबको मिलाकर घावों पर लगाओ.

अगर खुरों के घावों में कीड़े पड़ जावें तो सादा तेल और तारपीन बराबर मिलाकर लगाओ.

अगर तारपीन न मिले तो नीलाथोथा चार तोले. आध सेर गरम पानी में गलाकर ज़ख़्म पर डालो.

अगर यह भी न मिले तो तम्बाकू और बोवई के पत्ते कूटकर ज़ख़्म पर बांध दो. इससे कीड़े मरजावेंगे.

पिलाने का नुस्खा.

अगर जानवर बहुत उदास और कमज़ोर मालूम हो तो यह नुस्खा पिलाओ:—

(६) कपूर आधा तोला, नौसादर एक तोला, देशी शराब एक छटांक. कपूर को शराब में पीस के मिलाओ, फिर इसके साथ नौसादर को एक सेर ठंडे पानी में मिलाकर दिन में एक दफ़े पिलाओ.

अगर क़ब्ज़ हो तो पावभर मीठा तेल दिन में एक दफ़े पिलाना चाहिये.

२.—माता (Cow-pox)

१. बीमारी का बयान—इसको अंग्रेज़ी में काऊ-पॉक्स (Cow-pox), आम ज़बान में गाय की चेचक और देहाती ज़बान में माता कहते हैं. यह भी एक छूत की बीमारी है. इसमें जानवर को बुखार आता है और थनों और रानों के भीतर छोटी छोटी फुन्सियां पैदा होजाती हैं. यह बीमारी सिर्फ़ गाय को होती है, बैल को नहीं होती. आदमियों की तरह जानवर भी इस बीमारी में एक मर्तबा बीमार होकर हमेशा के लिये बच जाता है. यह बीमारी लाइलाज नहीं है.
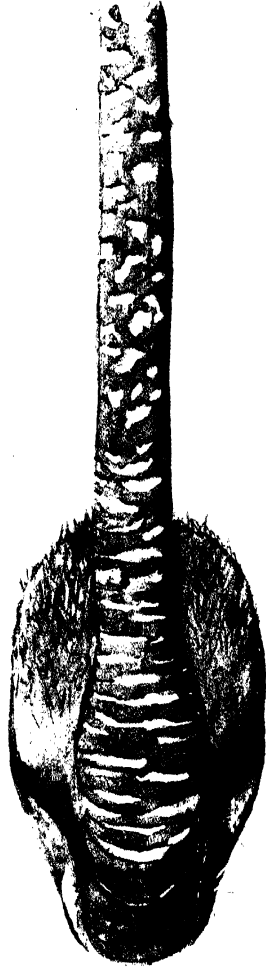
माता के जानवर के खाने की नाली का वह अवयव बताया गया है जिसपर माता का ज़ोर होना है।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

२. सबब—यह बीमारी भी एक खास छूतदार विष के सबब से पैदा होती है.

३. पहचान—यह बीमारी पहिले बुखार से शुरू होती है, मगर कम बुखार होने की वजह से गाय का मालिक नहीं पहिचान सकता. फिर औं पर फुन्सियां निकल आती हैं, गाय का दूध कम होजाता है, दूध निकालते वक़् गाय लातें मारती है. औं व दूध लाल होता है. खाना जुगालना बहुत कम होजाता है, फुन्सियां सब बराबर व एक ही सूरत की नहीं होतीं और न एक ही वक़् में निकलती हैं.

४. इलाज—बीमार जानवरों को अच्छे जानवरों से अलग रखना और सफ़ाई पर पूरा २ ध्यान रखना लाज़मी है. जो शख़्स बीमार गाय का दूध दुहे वह तन्दुरुस्त का न दुहे. दूध दुहने में खबरदार रहे कि अगर खुरन्ट से थनों का छेद बन्द होजाये तो उसको किसी सलाई से खोल दे और औं को गरम पानी से (नमक मिलाकर) सेंके और गाय को एक जुल्लाब दे.

नुस्ख़ा जुल्लाब.

मैगनेशिया ४ छटांक, और अगर यह न मिल सके तो खाने का नमक आधसेर, गरम पानी एक सेर, पिसी हुई सोंठ दो तोले. इन सब को मिलाके दिन में एक दफ़े पिलावे.

३.—भेड़ बकरी के खुर की बीमारी.

(Foot rot.)

१. बीमारी का बयान—इसको इंग्रेज़ी में फुट रॉट (Foot rot) कहते हैं. यह भी खुसीटे की क़िस्म की विषवाली और छूतदार बीमारी है जो कि भेड़ों और बकरियों को होती है और इलाज करने से अच्छी हो जाती है.

२. सबब—दलदल व कीचड़ में खड़ा रहना.

३. पहचान—पैर की घाई में सूजन और दर्द होता है, चलने में लंग, पीछे घाव होजाता है, खाना जुगालना कम हो जाता है.

४. इलाज—सफ़ाई का रखना, सूखी जगह में जानवरों को रखना, बीमारों के खुर गरम पानी से धोकर तारकोल (Coaltar) लगाना. अगर यह न मिले तो चार तोले नीलाथोथा आधसेर गरम पानी में मिलाकर उससे घावों को धोना और इसके बाद मीठा तेल व मिट्टी का तेल दोनों को बराबर लेकर उस जगह लगा देना.

४.—खाज (Mange).

१. बीमारी का बयान—इसको अंग्रेज़ी में मेंज (Mange), उर्दू में ख़ारिश या खुजली और देहाती बोली में खाज कहते हैं. यह भी एक छूतदार बीमारी है जो कि एक जानवर से दूसरे जानवर को हो जाती है. इसका अगर अच्छी तरह इलाज किया जाय तो आराम होजाता है.

२. सबब—ख़ास तरह के खाज के कीड़े जो कि चमड़े के ऊपर के हिस्से में होते हैं और जिनके काटने से जानवर को खुजली होती है और वह तकलीफ़ पाता है. जानवर को मैला रखना या ख़राब खाना भी इस बीमारी का सबब होसकता है, ख़ास करके ख़राब घास.

३. पहचान—बीमार जानवर के चमड़े पर खुजली पैदा होती है और वह हर चीज़ से जो उसे मिलती है बदन को खुजाने लगता है. बाल उड़ जाते हैं, लसदार पानी घावों से बहता है, चमड़े पर पपड़ियां और झुर्रियां होजाती हैं. अगर बीमार जानवर के चमड़े से बाल उखाड़कर उसे बग़ौर देखा जाये तो खाज के कीड़े चलते फिरते दिखलाई देते हैं.

४. इलाज—बीमार जानवरों को तन्दुरुस्त जानवरों से अलग रखना चाहिये. बीमार जानवर का खुरेरा बग़ैर खौलते पानी में धोये अच्छे जानवरों पर न फेरना चाहिये. बीमार जानवर का सामान अच्छे जानवरों पर न रखना या इस्तेमाल करना चाहिये. जो आदमी बीमार जानवरों के पास रहे वह अच्छे जानवरों को हाथ से न छूवे. बीमार जानवरों की कोई चीज़ अच्छे जानवरों के पास न लानी चाहिये. बीमार जानवर को गरम पानी व साबुन या रीठों से नहलाना चाहिये और उसका बदन ख़ूब साफ़ करके सुखाना चाहिये और चट्टों पर यह मरहम (मल्हम) लगानी चाहिये.

नुस्खा अव्वल.

(१) तारकोल (Coaltar) १ छटांक, चर्बी आधी छटांक, जवाखार आधी छटांक, गंधक आधी छटांक, तेल दस छटांक. इन सब दवाइयों को मिलाकर धूप में रखना और ज़रूरत के मुवाफ़िक़ लेकर चट्टों पर लगाना चाहिये, मगर यह ख़्याल रहे कि पहिले खाज के खुरन्ट छुड़ा दिये जायें, फिर यह दवा लगाई जाये, वर्ना कुछ फ़ायदा न होगा. अगर यह नुस्खा न बन सके तो नीचे लिखे हुए नुस्खे को काम में लाया जावे.

नुस्खा दोयम.

(२) गन्धक आधी छटांक, तम्बाकू आधी छटांक, मिट्टी का तेल दो तोले, सादा तेल आधपाव. सबको मिलाकर इसकी मरहम (मल्हम) बनाओ और ऊपर लिखे नुस्खे के बमूजिब इसको लगाओ.

५.—कूबक (Strangles).

१. बीमारी का बयान—इसको इंग्रेज़ी ज़बान में स्ट्रांगल्स (Strangles) कहते हैं. यह एक छूतदार ज़ुकाम है जो कि नौउम्र घोड़ों [illegible] और खच्चरों को होता है. अगर एक मर्तबा जानवर बीमार होजाय तो यह बीमारी फिर नहीं होती.

२. सबब—इस मर्ज़ का सबब ख़ास क़िस्म का विष फैलानेवाला माद्दा होता है, और मामूली तौर पर सर्दी का लगना, ख़राब मौसम का होना, मौसम की तब्दीली, मैला रहना वग़ैरह इस बीमारी के पैदा होने के सबब होते हैं.

३. पहचान बुख़ार—नाक की झिल्ली लाल और उससे पहिले पतला और पीछे गाढ़ा पानी निकलता है. वह कभी एक नथने से और कभी दोनों नथनों से बहता है, गले के नीचे सूजन और गदूद सूजे हुए रहते हैं. बीमार बहुत ही सुस्त और नाताक़त होजाता है, पिछली टांगों पर कभी कभी सूजन होती है, पेशाब ज़्यादा होती है. जब यह बीमारी ज़ोर पर होती है तो गले की सूजन इस क़दर बढ़ जाती है, कि जानवर गर्दन को हिला नहीं सकता. खाना पीना बिलकुल बन्द होजाता है और जानवर दम ख़र्राटे से लिया करता है. यह बीमारी नई उम्र के जानवरों में ज़्यादा और बूढ़ों में बहुत कम होती है.

४. एहतियात—बीमार जानवरों को तन्दुरुस्त जानवरों से अलग करना, सफ़ाई रखना, हवादार मकान में उन्हें रखना, ठंड और सीड़ से बचाना, अच्छी खुराक देना, चोकर का महेला, सत्तू, उबले हुए गाजर को खिलाना.

पीने के पानी में क़लमी शोरा, या मैगनेशिया दो तोले रोज़मर्रा मिलाकर दिन में एक दफ़े पिलाना.

५. इलाज-गले पर सेंक और तारपीन के तेल की मालिश होनी चाहिये.

अगर बीमारी का ज़ोर ज़्यादा हो तो अलावा सेंक व मालिश के जानवर को कपूर का भपारा देना चाहिये (जिसकी तरकीब शुरू किताब में लिख दी गई है). अगर गले का वरम ज़्यादा हो तो उसपर कई बार गरम पुल्टिस बांधकर शिगाफ़ देना चाहिये.

तरकीब शिगाफ़—वरम के नीचे की तरफ़ पौन गिरह से एक गिरह तक चीरा लगाओ. उसे लगाते वक़्त इतना ख़्याल रखना चाहिये कि ख़ून की रग बचजाय * और पीप को निकाल डाला जाय.

जिस चीज़ से चीरा देना हो उसे पहिले ख़ूब गरम पानी में डाल-कर उबाल लेना चाहिये और बाद उससे चीरा देना चाहिये. इसका मतलब यह है कि मैला उसमें नहीं रहता और ज़ख़्म बिगड़ता नहीं है.

इसके पीछे छै माशे नीलाथोथा आध सेर गरम पानी में मिलाओ और उससे घावों को धोओ.

नीचे लिखी हुई मल्हम में रुई या कपड़ा लथेड़ कर बत्ती बनाओ और घावों के छेद में रखदो. अगर ज़ख़्म का मुंह बन्द हो जावे तो उसपर नीलाथोथा लगाओ.

(मल्हम).

नुस्ख़ा मरहम.

मोम तीन तोले, राल तीन तोले, गन्दाबिरोजा चार तोले, तेल एक छटांक, कपूर तीन माशे लो. राल को पीसकर गन्देबिरोज़े में मिलाकर आग पर पिघला लो, बाद को पिसा हुआ कपूर और तेल इसके साथ मिलाओ, जब ठंडा हो जावे तो बन्द डबिया में रख लो.

---

* चीर फाड़ का काम नाज़ुक है. इसलिये यह काम उसीसे कराना चाहिये जो इस काम से वाक़िफ़ हो. अगर वाक़फ़ियत न हो तो सरकारी सालोत्री से काम को सीख लेना चाहिये.

६.—तोजाना यानी हमल का गिरजाना (Abortion).

१. बीमारी का बयान—यह एक छूतदार बीमारी है. बच्चा मां के पेट में पूरा होने नहीं पाता कि गिरजाता है. यह वबा के तौर पर फैल जाती है, अगर एक मादीन ने हमल गिराया हो तो दूसरी उसकी बू लेकर हमल गिरा देती है. मगर कभी यह बीमारी ग़ैर वबाई भी होती है. इसमें एक ही हामला मादीन हमल गिराती है, लेकिन उसका सबब ज़हरीला माद्दा नहीं होता, बल्कि किसी सदमे या बीमारी के सबब से ऐसा होता है.

२. सबब—एक छूत रखनेवाला जहरीला माद्दा होता है जो कि मादीन के कमल व पेशाब की जगह की अस्तरी झिल्ली में पहुंचकर खुजली पैदा कर देता है. इससे हामला मादीन हमल गिरा देती है और फिर दूसरे हामला जानवरों में इसकी छूत पहुंच जाने से औरों को भी नुक़सान पहुंचता है *

ग़ैर वबाई बीमारी का सबब—अन्दरूनी मर्ज़ (बीमारी), बेरूनी सदमा पहुंचने या किसी तेज़ दवा को काम में लाने से.

३. पहचान—चाहे यह बीमारी वबाई तौर पर फैलनेवाली हो या ग़ैर वबाई, पहिले से कुछ नहीं मालूम होती; मादीन बिलकुल अच्छी और तन्दुरुस्त हालत में मालूम होती है. बच्चा गिरने से कुछ पहिले उसको थोड़ा दर्द होता है और बच्चा गिर जाता है.

४. इलाज—दीगर मादीन जानवरों को इस जगह से दूर हटा देना चाहिये. बीमार जानवर की जेर † निकालना और अर्क़ नीले तूतिये से कमल और घाव को पिचकारी से धोके साफ़ करडालना चाहिये, और ताक़त देने वाली ख़ुराक (यानी चोकर, खल, दलिया वग़ैरह) देना चाहिये.

नुस्खा अर्क़ तूतिया.

तूतिया पांच तोले, गरम पानी पांच सेर. तूतिये को पानी में मिलालो.

---

* यह छूत तन्दुरुस्त जानवर के बीमार जानवर के साथ मिलने या रहने से पैदा होती है.

† जेर (Placenta) उस झिल्ली को कहते हैं जिसके भीतर बच्चा रहता है और जो बच्चा होने के बाद गिर पड़ती है.

बाब दूसरा.

इस बाब में उन छूतवाली बीमारियों का ज़िक्र किया है जो कि मार डालनेवाली और लाइलाज हैं.

१.—चक्कर की बीमारी (Anthrax).

१. बीमारी का बयान—इस बीमारी को अंग्रेज़ी में एन्थ्रेक्स (Anthrax) कहते हैं, और देहाती लोग इसको चक्कर की बीमारी कहते हैं. यह मारही डालनेवाली और लाइलाज * छूत रखने वाली बीमारी है, यह हरी घास चरनेवाले जानवरों को उस जगह होती है जहां ज़मीन में दलदल रहती है. इस बीमारीवाला जानवर दस घंटे से चौबीस घंटे के अन्दर मरजाता है. तादाद इस तरह मरनेवाले जानवरों की नब्बे फ़ी सैकड़ा है.

२. सबब—इस बीमारी का ख़ास सबब एक तेज़ ज़हरीला माद्दा है जो कि जानवरों के ख़ून में पहुंचकर बहुत जल्द अपना ज़हरीला असर फैलाता है.

३. पहचान—बीमार जानवर का एकदम बेचैन हो जाना; आंखों का लाल चमकदार और पानी से भरी हुई होना; बहुत ज़ोर का बुख़ार, चेहरा बहुत ही बुरा, बाल खड़े हुए, बदन का फड़कना, पाख़ाने व पेशाब के मक़ाम से कभी कभी ख़ून का आना, पेशाब का स्याह रंग का होना, और कभी बीमार जानवर का पागलसा मालूम होना.

बीमार खाना जुगालना बिल्कुल छोड़ देता है. आख़िर बेहवास व कमज़ोर होकर ज़मीन पर गिरके मरजाता है.

४. इलाज—उन क़ायदों का पूरा पूरा बरताव करना जो तन्दुरुस्ती के मुताल्लिक़ हैं और शुरू बाब अव्वल में बताये गये हैं. बीमार जानवरों को तन्दुरुस्त जानवरों से अलग रखना, लाशों को धरती में गाड़ना या जलाना. दवा से इस मर्ज़ का इलाज उमूमन बेफ़ायदा होता है, तौ भी कुछ करना

* बीमार जानवरों के स्पर्श से पानी में या ख़ुराक में कीटांशु (Bacilii) होजाने से या उन जगहों या चीज़ों के स्पर्श करने से जिनमें कीटांशु होते हैं, छूत लगती है

बीमारी गलाफूला। बैल का गला फूला हुआ है। बीमार बैल के गले पर इलाज करनेवाला बड़ी लकीरों की सूरत में गरम लोहे का दाग लगा रहा है।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

चाहिये. बीमार जानवरों को तेल तारपीन आधी छटांक, आध सेर अलसी के तेल में मिलाकर दिन में एक दफ़े पिलाना चाहिये. अगर किसी जगह पर वर्म (सूजन) मालूम हो तो उसको दागना चाहिये.

२.—गला फूला (Malignant Sore Throat).

१. बीमारी का बयान— गला फूलने की बीमारी को अंग्रेज़ी ज़बान में मेलिगनेन्ट सोरथ्रोट (Malignant Sore Throat) कहते हैं. यह एक छूत की बीमारी है जो कि जानवर को ३२ घंटे में मारडालती है. इसका ज़ोर बहुत ही ज़्यादा हलक़ और गले पर होता है.

२. सबब—इस मर्ज़ का भी और छूतदार बीमारियों की तरह ख़ास ज़हर होता है जो ख़ून में पहुंचकर बीमारी पैदा करता है.

३. पहिचान—इस मर्ज़ का ज़ोर बहुत ज़्यादा गले और हलक़ पर होता है. पहिले जानवर सुस्त हो जाता है और खाना जुगालना छोड़ देता है. बुख़ार बहुत ज़ोर का होता है. फिर गले के नीचे सूजन आनी शुरू होती है. मुंह से राल और नाक से रतूबत बहती है और गले की सूजन बढ़ती जाती है. फिर जानवर का घर्रा चलने लगता है जो कि दूर तक सुनाई देता है और दम लेने में बहुत तकलीफ़ होती है.

४. एहतियात—यह मर्ज़ ऐसी तेज़ी से हो जाता है कि वक़्त पर ख़बर न ली जाये तो बीमार जानवर झट ही जान घुटके मर जाता है. जानवरों के मालिक को चाहिये कि पहिले बीमार जानवरों को तन्दुरुस्त जानवरों से फ़ौरन अलग करदे और क़ायदे तन्दुरुस्ती को काम में लावे ताकि बीमारी फैलने न पावे.

५. इलाज—बीमार जानवर को पहिले एक जुल्लाब दे और बाद को गले पर गरम लोहे का दाग़ बड़ी लकीरों की सूरत में दे. इससे यह फ़ायदा होगा कि गले की सूजन इसक़दर न बढ़ जायेगी कि दम (सांस) रुक जावे. अगर दाग़ने का सामान न होसके तो चाक़ू से गले को गोद दे और घावों पर यह तेल लगाये.

घाव पर तेल लगाने का नुस्ख़ा.

(१) कपूर एक हिस्सा, मीठा तेल आठ हिस्से. दोनों को मिलाकर घावों पर दिन में २ दफ़े लगाओ.

नुस्खा जुल्लाब. (२) खाने का नमक आध सेर, पिसी सोंठ दो तोला, गरम पानी दो सेर. सबको मिलालो और पिलाओ.

(३) हलक़ के भीतर पुचारे से यह तेल लगाना चाहिये.

तेल जमालगोटा एक तोला, कड़वा तेल डेढ़ छटांक. दोनों को मिला दिया जाय.

३.—वबाय मवेशी (Rinderpest).

१. बीमारी का बयान—इसको इंग्रेज़ी ज़बान में रिन्डरपेस्ट (Rinder-pest) और हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में बड़ा रोग, चेचक वग़ैरह कहते हैं. देहाती लोग इसको भी माता ही कहते हैं. यह एक छूत से लग जानेवाला खराब बुखार है, जो हर क़िस्म के जुगालनेवाले जानवरों को बीमार कर सकता है.

२. सबब—इस बीमारी का भी दीगर छूत की बीमारियों की तरह खास ज़हरीला बीज होता है जो जानवरों के बदन में पहुंचकर खून में घुस-कर उसे खराब करदेता है. ज़्यादातर इसका ज़ोर खाने की नली पर होता है.

३. पहचान—बीमार की नाक, आंख और मुंह से मैला और बदबूदार पानी का बहना, खांसी, मुंह में बारीक चट्टे का पड़जाना, बदरंग और सख़्त बदबूदार पतले दस्त का होना जिसमें खून और लेसदार बलग़म के छीछड़े मिले हुए होते हैं, सख़्त बुखार का आना जो गर्मी और प्यास के बढ़ जाने से पहचाना जाता है.

इस बीमारी में मादीन जानवर के पेशाब के मक़ाम पर भी बारीक चट्टे दिखाई पड़ते हैं.

४. एहतियात—तन्दुरुस्ती रखनेवाले क़ायदे की पूरी पाबन्दी, सफ़ाई, बीमार जानवरों को तन्दुरुस्त जानवरों से अलग रखना, लाशों को दफ़न करना या जलाना.

अगर बीमारी बहुत ज़ोरदार मालूम हो तो बीमार जानवर ज़रूर मर जाता है और हल्की सूरत में हो तो बीमार कुदरती तौर पर बीमारी का दौरा पूरा होजाने पर बच जाता है.
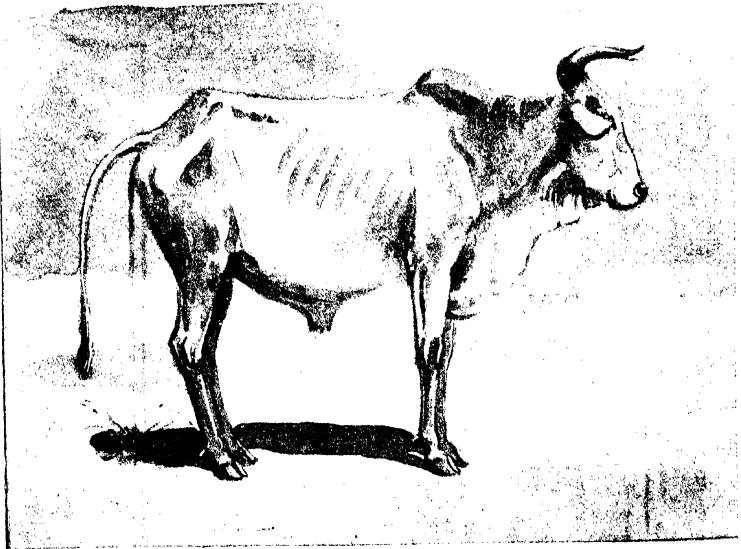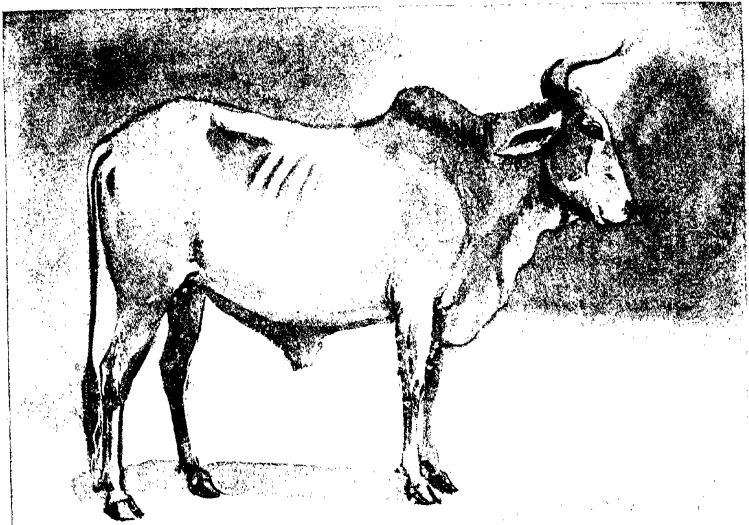
रिंडर पेष्ट (याने माता) की बीमारीवाला जानवर। रोग होने से पहिली हालत और रोग होने से पीछे की हालत मुकाबले के लिये दी गई है।
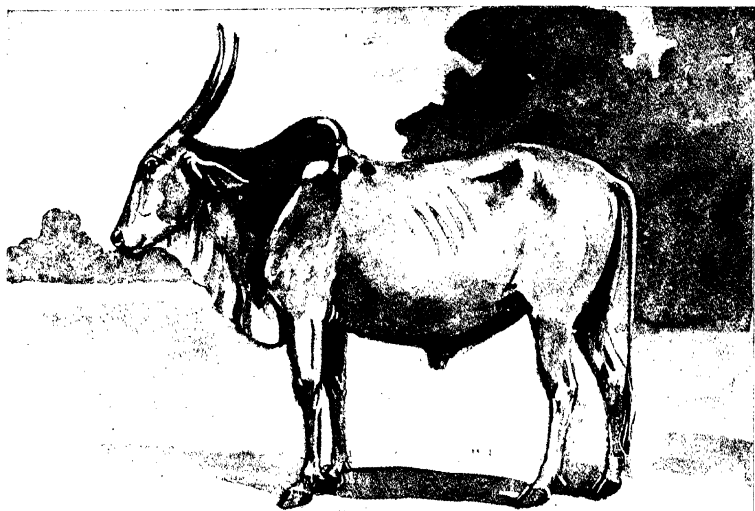
चित्रशाला प्रेस, पूना।

ब्लॅक क्वार्टर की बीमारी । रोग होने से पहिले की हालत और रोग होने से पीछे की हालत बताइ गई है ।

चित्रशाला प्रेस, पूना ।

फडसूजन की बीमारी में पुट्ठे या फड पे सूजन आई है। इसमें यह दिखलाया है कि इसको छुरी या चाकू से कैसे खोलना चाहिये।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

५. इस बीमारी में जानवर को नरम खाना यानी दलिया या चांवलों की कांजी * दूध में मिलाकर रात दिन में तीन चार दफ़े पिलानी चाहिये और तेल और गरम पानी का हुकना देना चाहिये. अगर दस्त जारी हों और जानवर बहुत ही कमज़ोर मालूम हो तो यह नुसखा देना चाहिये :—

नुसखा.

कपूर नौ माशे, शोरा नौ माशे, धतूरे के बीज चार माशे, चिरायता नौ माशे, देशी शराब आधपाव, पिसा हुआ माजू नौ माशे. इनको पीस कर तीन पाव ठंडे पानी या कांजी * के साथ पिलावे और हर १२ घंटे के बाद इतनी ही खुराक फिर दिया करे.

४.—फड़सूजन (Black quarters).

१. बीमारी का बयान—इस बीमारी को इंग्रेज़ी ज़बान में ब्लैक कार्टर्स (Black quarters) और देहाती बोलचाल में फड़सूजन कहते हैं. यह मारडालनेवाली और छूत से फैलनेवाली बीमारी है. इस बीमारी वाला जानवर २४ घंटे के अन्दर मर जाता है. अगर थोड़ा ज़ोर हो तो बच भी जाता है; लेकिन अक्सर सौ जानवरों में से दो बचते हैं.

२. सबब—यह बीमारी अपने खास ज़हर के सबब पैदा होती है जो गदूदों व खून की नालियों में पहुंचकर अपना ज़हर फैलाती है. यह बीमारी बनिस्बत बुड्ढों के बच्चों को ज़्यादा होती है.

३. पहचान—इस बीमारी का ज़ोर एकदम और अचानक होता है. जानवर पहिले सुस्त और एक दो घण्टे के बाद किसीक़दर अकड़ जाता है. पिछले पैरों से लंगड़ाकर चलता है, बुखार ज़ोरदार, पुट्ठे, कमर या किसी दीगर हिस्से जिस्म पर सूजन आजाती है जो कि हाथ रखने से गरम और दर्द की भरी हुई मालूम होती है. थोड़े घण्टों में सूजन का मवाद पड़ जाता है. इसलिये सूजन पर हाथ फेरने से चरचराहट की आवाज़ सुनाई देती है. बीमार जानवर सांस जल्दी जल्दी लेता है, खाना, जुगालना छोड़ देता है.

---

* चांवल के मांड या आटे की पतली लेटी को कांजी कहते हैं.

४. एहतियात—क़ायदे तन्दुरुस्ती की पाबन्दी, सफ़ाई, बीमार जानवरों को तन्दुरुस्त जानवरों से अलग करना, लाशों को जलाना, या दफ़न करना.

५. इलाज—बीमार के सूजन को छुरी या चाकू से खोल देना चाहिये और उसको गरम पानी से धोकर और लोहा गरम करके उसके भीतर का चमड़ा अच्छी तरह जला देना चाहिये और यह नुस्खा पिलाना चाहिये:—

नुस्खा.

नमक आध सेर, एलुवा एक तोला, सोंठ दो तोले, गुड़ का शीरा आध पाव, पानी आध सेर. इन दवाइयों को आध सेर पानी में मिलाकर दिन में एक दफ़े पिला देना चाहिये.

५.—दीवानगी (Rabies or Hydrophobia).

१. बीमारी का बयान—पागल कुत्ते के काटने से इन्सान की तरह गाय, घोड़े वग़ैरह सब क़िस्म के जानवर दीवाने होजाते हैं. इसको इंग्रेज़ी में रेबीज़ या हैडरोफ़ोबिया (Rabies or Hydrophobia) कहते हैं.

यह एक क़िस्म की बुरी खतरनाक लाइलाज और छूत रखनेवाली बीमारी है, मगर और छूत रखनेवाली बीमारियों में और इसमें यह फ़र्क़ है कि इसका ज़हर (विष) तन्दुरुस्त जानवरों में उसी वक़्त असर करता है कि जब कोई दीवाना जानवर काटखाये या उस जानवर की राल या थूक मुंह से या किसी घाव के रास्ते तन्दुरुस्त जानवर के बदन में चली जावे.

२. सबब—इस बीमारी का सबब खास ज़हरीला मादा है जो कि कुत्ते, बिल्ली, गीदड़, लोमड़ी वग़ैरह की क़िस्म के जानवरों में खुदबखुद पैदा होजाता है और यह ज़हर इन जानवरों के दांतों व राल वग़ैरह में पाया जाता है. ये जानवर जब दीवाने होजाते हैं तो दीगर हैवानों को और इन्सान को काटकर बीमार करदेते हैं.

३. पहचान—किसी मवेशी या घोड़े को पागल कुत्ता काटे तो खासकर दूसरे या तीसरे हफ़्ते के बाद बीमारी के लक्षण पैदा होते हैं. बीमार जानवर को बहुत गुस्सा आजाता है और जानवर नर (Male) हो तो उसकी ताक़त बढ़ जाती है. जो चीज़ सामने आती है उसपर जानवर मुंह मारने लगता है, मुंह से राल बहाता है, आंखें चमकती हुई होती हैं. खाना हज़्म नहीं होता और भूख नहीं लगती, पिछली टांगों में झटके आते हैं, लक़वे की सी हालत हो जाती है. गला बन्द होने के सबब जानवर पानी नहीं पी सकता. बीमार जानवर की आवाज़ (बोली) बदल जाती है और जानवर मरजाता है.

रेबीज याने हेड्रोफोबिया का मरीज।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

इस तसवीर में यह दिखाया है कि रेबीज या हैड्रोफोबिया के बीमार जानवर को पागल कुत्ते या गेदुवे ने जिस जगह पर काटा हो, उस जगह को छुरी या चाकू से कैसे काटना चाहिये।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

४. इलाज—जिस वक़्त घोड़े या मवेशी को पागल कुत्ता काटे तो उस काटी हुई जगह को छुरी या चाकू से काट दिया जावे और पीछे खूब गरम लोहे से घावों को दाग़ दिया जावे और फिर उस घाव पर कई दिन तक खुरन्ट न जमने दिया जावे ताकि वह हरा रहे और मवाद निकलता रहे जिससे कि ज़हर जिस्म में बढ़ने न पावे. जब पागलपने के लक्षण शुरू हो जाते हैं तब यह बीमारी लाइलाज होजाती है. उस वक़्त बीमार जानवर को तन्दुरुस्त जानवरों से अलग कर देना चाहिये, क्योंकि यह जानवर भी पागल होने पर मिस्ल कुत्ते के काटने की घात करता है और दूसरे जानवरों या मनुष्यों को बीमार करदेता है. ऐसे जानवर की लाश जला या गाड़ देनी चाहिये.

६.—बदकनार (Glanders).

१. बीमारी का बयान—इसको इंग्रेज़ी में ग्लेंडर्स (Glanders) और देसी ज़बान में बदकनार कहते हैं. यह एक सख़्त छूत रखनेवाली बीमारी है जो कि घोड़ों, गधों और खच्चर वग़ैरह को होजाती है.

२. सबब—इस बीमारी का सबब भी खास विषवाला छूतदार मादा होता है जो अपने विष से जानवरों को बीमार करदेता है.

३. पहचान—यह बीमारी दो सूरतों में पैदा होती है, ज़ोरदार और हलकी. ज़ोर की हालत हमेशा बुखार के साथ शुरू होती है, हलकी हालत में बुखार कम होता है या बिलकुल नहीं होता. दोनों हालतों में खांसी मौजूद रहती है और नाक से रतूबत बहती है, नाक के भीतर की झिल्ली पर ऊदे रंग की चित्तियां पैदा होजाती हैं, आखिर में रफ़्ता २ घाव पैदा होजाते हैं. कभी नाक से खून भी आता है, गले के नीचे के गदूद फूले हुए होते हैं. बीमार जानवर दिन ब दिन दुबला और नाताक़त होता जाता है, आखिरकार मरजाता है.

४. इलाज—क़ायदे तन्दुरुस्ती की पाबन्दी, बीमार जानवरों को तन्दुरुस्त जानवरों से अलग करना, लाशों को जलाना या गाड़ना, सफ़ाई रखना.

बीमारी को अच्छी तरह पहचानकर बीमार जानवर को मार डालना चाहिये. लेकिन अगर गाय हो तो उसे अलग लेजाकर रखना चाहिये.

बाब तीसरा.

वे बीमारियां जो ग़ैर छूतवाली हैं और आम बीमारियों के नाम से मशहूर हैं.

१.—हलक़ में रोक का होजाना.

(Choking.)

१. बीमारी का बयान—हलक़ के पास दो रास्ते (नलियां) रहती हैं. एक खाना पेट में पहुंचाने के वास्ते है, दूसरी से सांस के ज़रिये हवा फेफड़ों में जाती है. यह बीमारी तब ही होती है जब पेट में खाना जानेवाली नली में कोई चीज़ अटक या रुक जाती है, इसलिये इस बीमारी को रोक (Choking) कहते हैं.

२. सबब—सख़्त और मोटा चारा जल्दी २ खाजाना, कील, हड्डी, चीथड़े, गुठली वग़ैरह का निगल जाना, कभी खाने की नली में किसी और सबब से रोग होजाने से भी रोक होजाती है.

३. पहचान—बीमार मुंह बढ़ाकर खांसता है, गरदन सीधी रखता है, और गले में ऐसी तकलीफ़सी होती है कि जिससे यह मालूम होता है कि जानवर इसको बाहर निकालना या निगलना चाहता है, मुंह और नाक से पानी बहता है, जानवर कोई चीज़ खा पी नहीं सकता, अगर पानी या तेल पिलाया जाय तो नाक से निकल जाता है.

४. इलाज—अलसी का तेल आधपाव, शराब आधपाव मिलाकर गरम करके एक २ छटांक पिलावे, इससे खाने की नली और अटकी हुई चीज़ चिकनी होकर नीचे उतर जायगी या बाहर निकल आयगी. अगर रोक हलक में हो तो हाथ गले में डालकर जो चीज़ अटकी हुई हो उसे उंगलियों से निकाल लेना चाहिये. मगर हाथ डालने से पहिले यह ज़रूर है कि दो मज़बूत आदमी जानवर के मुंह को ज़ोर से खोले रक्खें ताकि जानवर हाथ को चबा न ले, और एक आदमी बाहर से गले पर हाथ रखकर मुंह की तरफ़ दबा रक्खे ताकि जब गले में हाथ डाला जाय तो

जानवर के गले में कोई चीज अटकी हुई है जिसको कि गले में हाथ डालकर निकाल रहे हैं।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

जानवर के गले के भीतर कोई चीज अटकी हुई है और उसकी वजह से गले में सूजन दिखाई देती है। उसके नीचे की तरफ मालिश कर रहे हैं ताकि अटकी हुई चीज नीचे पेट में उतर जाय।

चित्रशाला प्रेस, पूना।
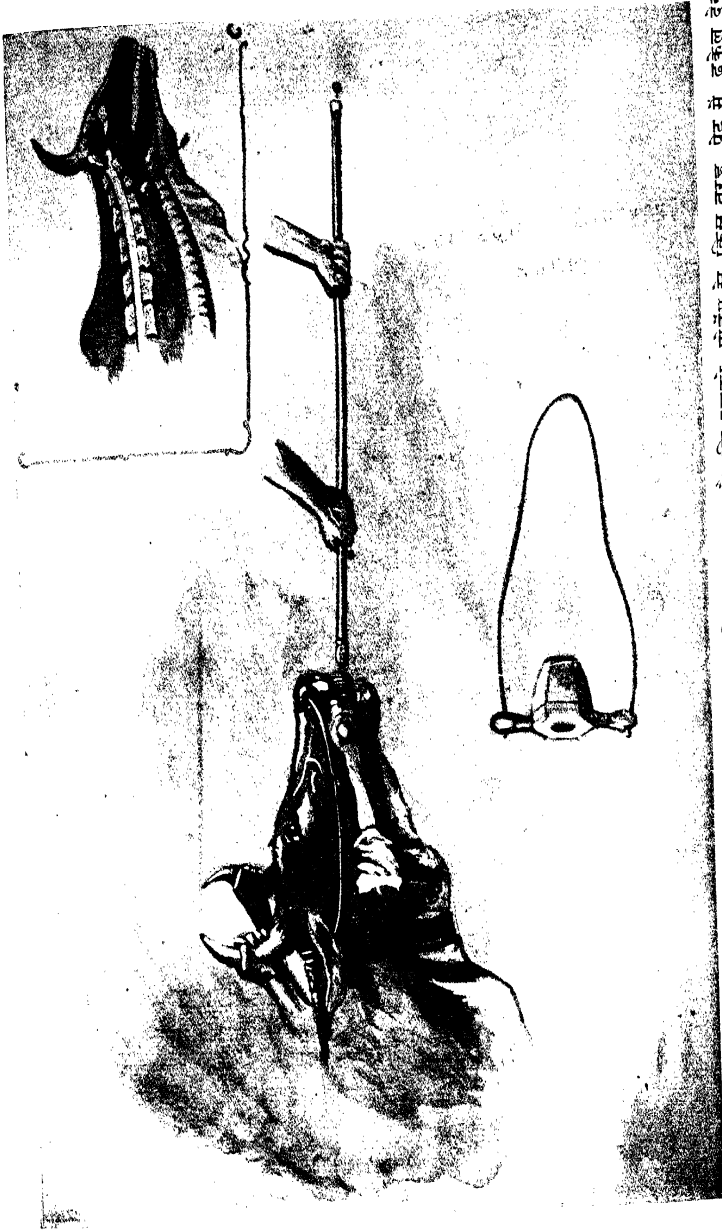
जानवर के गले में कोई चीज अटकी हुई है। यहां यह दिखलाया गया है कि इसको प्रोबेंग से किस तरह पेट में ढकेल देना चाहिये और गले में जिस जगह चीज रुकी हुई है उसका सेक्शन भी दिया गया है।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

रुकी हुई चीज़ हाथ से आगे न सरक जाय. अगर यह गर्दन के हिस्से में हो तो तेल और शराब थोड़ा थोड़ा बार बार देता रहे और गले पर जहां वह चीज़ या सूजन दिखलाई देवे उसकी नीचे की तरफ़ हलकी हलकी मालिश करे ताकि अटकी हुई चीज़ नीचे पेट में उतर जावे. गर्दन छोड़कर अगर छाती की तरफ़ रोक हो तो यह तदबीर कीजाय कि उंगली के बराबर मोटी और छै सात फुट लम्बी बेद की छड़ी लेकर उसके एक सिरे पर अण्डे के बराबर गेंद की तरह बारीक सन या रुई लपेटकर उसपर एक कपड़े के टुकड़े को सींदे जो ऐसा मज़बूत हो कि अलग न होसके फिर उसको तेल में खूब भिगोकर हलक़ में आहिस्ता अहिस्ता डाले और रोक तक पहुंचाकर अटकी हुई चीज़ को आहिस्ता आहिस्ता दबावे ताकि रोक हट जावे. मगर याद रक्खो कि बेद की लकड़ी डालने से पहिले दो मज़बूत आदमी जानवर के मुंह को खोल रक्खें या जानवर के मुंह में एक लकड़ी का डंडा लगाम की तरह चढ़ा देवें और उस डंडे के बीच से एक छेद आर पार हो जिसकी राह से बेद की लकड़ी चली जावे, इससे यह फ़ायदा होगा कि जानवर आला प्रोबेंग (Probang) या बेद को चबा नहीं सकेगा. अगर एक दफ़े बेद डालने से रोक न हटे तो उसे निकाललें, और कुछ गरम पानी और तेल मिलाकर पिलावें, और जब वह निगल जावे तो फिर वही तदबीर आहिस्ता आहिस्ता रोक को हटाने के लिये करें. गरज़ कि कई दफ़े ऐसा करने से उम्मेद है कि रोक हट जावेगी. जब रोक हट जावे तो कुछ रोज़ तक जानवर को नरम खुराक यानी दलिया व चोकर वग़ैरह दें, क्योंकि खाने की नली कमज़ोर होती है. सख़्त खाना देने से फिर रोक होने का डर रहता है.

सूचना:—यह काम ऐसा है कि जिसके करने में ख़ौफ़ है. इसको बग़ैर किसी से सीखे न करे.

२.—पेट का फूलजाना यानी अफरा.

(Tympanitis.)

१. बीमारी का बयान—यह बीमारी मवेशी में एक ख़ास और ख़तरनाक है, मौसमे बहार (वसन्त) व बरसात के शुरू में जो घास उगता है

उसे खाते ही यह बीमारी होती है. इस बीमारी को इंग्रेज़ी में टिम्पानाइटिस (Tympanitis) कहते हैं.

२. सबब—इस बीमारी के सबब बहुतसे हैं, ज़्यादातर यह बीमारी खाना पेट में सड़ जाने से पैदा होती है. बाज़ मौसमी चारे खाने से जैसे साग, हरी ज्वार, शुरू बरसात का चारा, सड़ी घास व दाना खिलाने से या बड़ी बदहज़मी से भी पेट फूल जाता है.

३. पहचान—पेट फूल जाता है, और बाईं कूंख के पास एक गोलासा उभरा हुआ मालूम होता है. अगर कूंख को बजाना चाहें तो ढोलकीसी आवाज़ निकलती है. दम लेने में तकलीफ़ होती है, खाना जुगालना बंद हो जाता है, पेट में दर्द, जानवर सर और गर्दन आगे बढ़ाकर खड़ा रहता है.

नुस्ख़ा अव्वल.

४. इलाज—अगर बीमारी बहुत ज़्यादा न हो तो उसको पहिले यह नुस्खा पिलावे. पिसी सोंठ २ तोले, काली मिर्च दो तोले, हींग चार माशे, गरम पानी आध सेर. सब को मिलाकर घोटकर पिलावे, और आधे घण्टे तक इस दवा के असर का इंतज़ार करे. बीमार जानवर को टहलाना और उसके पेट की खासकर बाईं तरफ की कूंख पर मालिश करना बहुत मुफ़ीद है. जब कुछ फ़र्क़ मालूम हो तो इसी नुस्खे को फिर पिलावे, या यह दूसरा नुस्खा दिया जावे.

नुस्खा दूसरा.

पिसी हुई सोंठ दो तोला, हींग तीन माशे, तारपीन का तेल आधी छटांक, खाने का नमक दो छटांक, बड़ी इलायची आधी छटांक, काली मिर्च चार माशे. सबको एक सेर पानी में घोटकर पिलावे.

अगर पेट में बहुत बोझ और बदहज़मी हो तो मेदे को खाली करने के लिये एक जुल्लाब दे.

नुस्खा जुल्लाब.

मैगनेशिया दो छटांक, गन्धक आधी छटांक, सोंठ डेढ़ तोला, डेढ़ सेर गरम पानी में घोलकर पिलावे. अगर मैगनेशिया न मिले तो उसके बदले दो छटांक सादा नमक डालदे.

५. खुराक—जब आराम होजावे तो जानवर को खुराक कम और साफ़ करके दो. उसमें कूड़ा करकट मिट्टी वग़ैरह न रहें अगर किसी चरने की जगह में चरने से बीमारी ज़ाहिर हुई हो तो दीगर जानवरों को वहां न चरने दो. जब ओस सूख जावे तब उस जगह जानवरों को चराओ. अगर किसी खराब क़िस्म के चारे या सड़ी घास खिलाने से बीमारी पैदा हो तो उसे बंद करदो. अगर जानवर का हाज़मा बिगड़ गया हो तो यह नुस्खा, दो तीन हफ़्ते तक दो और माफ़िक़सर मेहनत लो:—

नुस्खा हाजमे का.

सौंफ़ एक तोला, पिसी सोंठ एक तोला, स्याह नमक ३ तोला, अजवायन २ तोला, सफ़ेद जीरा एक तोला. सब को कूटकर मिलालो, और आधी छटांक दाने में मिलाकर जबतक कि हाज़मा दुरुस्त न हो रोज़मर्रा एक दफ़े दो.

३.—दस्तों की बीमारी (Diarrhœa).

१. बीमारी का बयान—जब कि जानवर खिलाफ मामूल बार २ पतला गोबर या लीद करे तो इसको देसी ज़बान में दस्तों की बीमारी और इंग्रेज़ी ज़बान में डायरिआ (Diarrhœa) कहते हैं.

सबब—यह बीमारी भी कई सबब से होती है. बदहज़मी, खराब खाना, सर्दी का लगजाना, पेट में कीड़ों का होना, किसी दस्त लानेवाली दवा का बे एहतियात से खिलाना वग़ैरह.

३. पहचान—मरीज़ बार बार पतला गोबर या लीद करता है. कम खाता है, कम जुगालता है, किसीक़दर कमज़ोर और दुबला होजाता है.

४. इलाज—जिस सबब से बीमारी हुई हो उसको दूर करना चाहिये यानी अगर मौसम बहार (वसन्त) या बरसात के शुरू में जब ताज़ा घास उगे और उसके चरने से दस्त जारी हों तो ऐसे घास को चरने न दे. इससे दस्त बन्द होजाते हैं. अगर खराब सड़ा चारा या गन्दा पानी पीने का सबब हो तो फ़ौरन उस पानी के पिलाने को बंद करना चाहिये और अच्छा साफ़ चारा और मीठा पानी पिलाना चाहिये. अगर चरने की

जगह में खास तरह की पौइयां या जहरीला घास चरने के सबब से बीमारी हुई हो तो उस चरने की जगह में जानवरों को न जाने देना चाहिये. अगर इन सब बातों के रोकने पर भी बीमारी जारी रहे तो समझना चाहिये कि आंतों में कुछ खुजली पैदा करनेवाला खराब मवाद व गांठें मौजूद हैं, या खून में कुछ खराब मवाद मौजूद है जो दस्तों की सूरत में निकल रहा हो तो ऐसी हालत में बीमार को पहिले यह जुल्लाब दो.

नुस्खा जुल्लाब.

अण्डी का तेल एक छटांक, मीठा तेल आधपाव. दोनों को मिलाकर पिला दो ताकि वह मवाद सब निकल जावे. अक्सर देखा गया है कि फ़क़त जुल्लाब देने से ही दस्तों की बीमारी जाती रहती है. अगर जुल्लाब देने के बाद भी दस्त जारी रहें तो फिर रोकने की दवा देने की ज़रूरत होती है, उसका नुस्खा यह है:—

क़ाबिज़ नुस्खा.

१. पिसी हुई खरिया मिट्टी एक छटांक, पिसा हुआ कत्था दो तोले, पिसी हुई सोंठ दो तोले, अफयून तीन माशे, लुआब * ईसबगोल आध पाव मिला के सुबह और शाम दो दफ़े दो.

क़ाबिज़ नुस्खा.

२. ढाक का गोंद एक तोला, अफयून चार माशे, रेवन्दचीनी चार माशे को एक सेर दही या गाढ़ी (सेरभर दूध, सेरभर पानी) लस्सी के साथ घोटकर मिलाके दो. यह एक मोताज है. ऐसी मोताजें सुबह, दोपहर और शाम को दो.

पेचिश (Dysentery).

१. बीमारी का बयान—पेचिश उस बीमारी को कहते हैं जिसमें जानवर बहुत तकलीफ़ से बार बार थोड़ा थोड़ा मैला पतला खून व आंव मिला हुआ गोबर या लीद करता है.

---

* लुआब बनाने की तरकीब—खौलते हुए सेरभर पानी में जिस चीज़ का लुआब निकालना हो उसे आधपाव डाले और उसी वक्त उसे उतार ले. जब यह सब ठंडा होजावे तो पानी को नितार ले, इसीको लुआब कहते हैं.

२. सबब—यह मर्ज़ (बीमारी) ख़ास तौर पर दस्तों की बीमारी के बाद गला, सड़ा, सख़्त खाना खाने से, सर्दी वग़ैरह के लग जाने से हो जाया करता है.

३. पहचान—बीमार जानवर बार बार गोबर करने लगता है और ज़ोर से ऐंठता है, थोड़ा २ पतला गोबर जिसमें कड़ी लेंडियां भी होती हैं, खून और आंव से मिला हुआ निकलता है. बीमार जानवर कमर दबा के सुकोड़े हुए रहता है. किसीक़दर बुख़ार और प्यास की ज़्यादती रहती है, और कभी कभी इस बीमारी में कांच बाहर निकल पड़ती है.

४. इलाज—सब से पहिले एक तेल का जुल्लाब दो ताकि आंतें साफ़ होजायें.

नुस्ख़ा जुल्लाब.

(१) मीठा तेल पाव भर, अंडी का तेल आध पाव, अफ़यून तीन माशे, अलसी का लुआब आध सेर. पहिले अफ़यून को पावभर गरम पानी में हल करलो. फिर सब चीज़ों को मिलाकर बीमार जानवर को पिला दो, सर्दी व गरमी से बचाओ. थान साफ़ हवादार और सूखा हो, खाने के लिये अलसी और चांवलों का मांड पकाकर तीन चार दफ़े रात दिन में पिलाओ. पीने के पानी में अगर ईसबगोल या अलसी का किसीक़दर लुआब मिलाकर पिलाया जाय तो ज़्यादा फ़ायदा होता है. जब जुल्लाब होचुके तो आंव रोकने के लिये यह नुस्ख़ा दो.

नुस्ख़ा पेचिश.

(२) अकव्वे की जड़ की छाल एक तोला, सौंफ़ दो तोला, पोस्त ख़शख़ाश दो तोले, दारचीनी आधा तोला, पानी एक सेर. इन सब चीज़ों को खूब जोश देकर छान लो और आध सेर चांवलों की मांड इसके साथ मिलाकर बीमार जानवर को पिलाओ.

सबसे सहल इलाज पेचिश का यह है कि बेल के फल का गूदा दो तोले रोज़ आध पाव आटे या पावभर पानी के साथ मिलाकर दिया जावे.

अगर क़बज़ियत हो तो जुल्लाब दो और बाद उसके बेल के फल का गूदा दो तोले ऊपर बतलाये हुए नुस्ख़े के मुताबिक़ दो.

५.—बदहज़्मी (Indigestion).

१. बीमारी का बयान—बदहज़्मी उस बीमारी को कहते हैं जिसमें जानवर लीद या गोबर करना बिलकुल छोड़ देता है.

२. सबब—बदहज़्मी हकीकत में कोई बीमारी नहीं है. बल्कि दीगर बीमारियों की पहचान है, मगर कभी कड़ा और सूखा खाना खाने या अर्से तक थान पर बंधे रहने से यह बीमारी होजाती है.

३. पहचान—जानवर सुस्त रहता है, गोबर या लीद कम या देर में करता है, खाना पीना कम करदेता है.

४. इलाज—पहिले ख़ुराक का इन्तज़ाम करो, यानी अगर सख़्त और सूखा चारा जानवर पाता हो तो उसे बदल दो, और एक हलका जुल्लाब दो, यानी आध पाव सादा तेल रोज़ पिलाओ. अगर इससे मरज़ रफ़ा न हो तो गरम पानी और साबुन का हुकना करो.

कुरकुरी (Colic).

१. बीमारी का बयान—यह एक कड़ा और खतरनाक मशहूर पेट का दर्द है जोकि खास तौर पर घोड़ों को हुआ करता है और दीगर जानवरों को भी हो सकता है.

२. सबब—इस बीमारी के बहुत सबब हो सकते हैं, क्योंकि ख़ासकर यह बीमारी खाने पीने की ख़राबी और मालिक की भूल से हुआ करती है. हमारे मुल्क में ख़ास रिवाज यह है कि घोड़े को पहिले दाना खिला-कर पीछे झट पानी पिला दिया जाता है. इससे वह दाना मेदे से आंत में चला जाता है और वहां जाकर दर्द पैदा कर देता है. कभी ऐसा होता है कि जानवर से ज़्यादा मेहनत ली जाती है और बाद भूख के उसको खाना दिया जाता है और वह जल्दी जल्दी उसको अधचबाया हुआ निगल जाता है जो कि पेट में जाकर अच्छी तरह हज़्म न होने की वजह से दर्द पैदा कर देता है. कभी ज़्यादा मेहनत लेकर ठंडा पानी पिलाने से भी यह दर्द हो जाता है. सड़ा गला हुआ खाना देने से भी आंत में हवा रुक जाती है और उसके न निकलने से दर्द हो जाता है. जो जानवर रेत या मिट्टी खाते हैं उनको भी यह बीमारी हो जाती है.

३. पहचान—बीमार जानवर तकलीफ़ के कारण उठता बैठता है, बार बार मुड़कर कूंख की तरफ़ देखता है. दुम ऐंठता है, लीद और पेशाब बन्द हो जाती है. अगर दर्द की ज़्यादा तकलीफ़ हो तो बीमार जानवर लोटता है और पेट में लातें मारता है. इसमें बुखार जोर का आता है. आंख और नाक की भीतर की झिल्ली लाल हो जाती है.

४. इलाज—इस बीमारी में पहिली जरूरी बात यह है कि बीमार जानवरों को खुले थान में खूब घास वग़ैरह बिछाकर छोड़ देना चाहिये, ताकि बीमार जानवर बार बार के उठने बैठने से अपने आप को ज़ख़्मी न करले. मुंह में एक छींका चढ़ा देना चाहिये ताकि जानवर कुछ खा पी न सके. इसके बाद गरम पानी, साबुन और तेल मिलाकर हुकना देना चाहिये. इसके बाद अगर दर्द का सबब आंत में रोक का होना या रेत की मौजूदगी हो तो यह नुस्खा जुल्लाब का देना चाहिये:—

नुस्खा जुल्लाब.

(१) पिसा हुआ एलुवा पांच तोले, पिसी सोंठ एक तोला, खाने का नमक आधी छटांक, शोरा दो तोले, इन सब चीज़ों को एक सेर गरम पानी में मिलाकर एक दफ़े पिला दिया जावे.

इसके बाद जानवर को टहलाओ और उसके पेट पर सेंक या मालिश करो. बाद दस्त आने के जानवर को आराम हो जावेगा.

और अगर दर्द हवा के सबब हो तो हवा (रीह) निकलने के लिये यह नुस्खा देना चाहिये.

नुस्खा रीह (हवा) निकलने का.

(२) तम्बाकू के पत्ते दो तोले, अकव्व की जड़ की छाल दो तोले, साधा नमक आध पाव, गुड़ का शीरा आध पाव, गरम पानी आध सेर, सब चीज़ों को पानी में घोटकर दिन में तीन दफ़े जबतक रीह (हवा) खाली न हो पिलाओ.

नुस्खा २.

तारपीन तेल आधी छटांक, मीठा तेल पावभर, चरस नौ माशे, हींग नौ माशे को डेढ़ पाव गरम पानी में घोटकर पिलाओ. जबतक रीह साफ न हो यही नुस्खा तीन तीन घंटे में पिलाओ.

(३) पेशाब जारी करने के लिये गरम पानी किसी बरतन में लेकर नेजे (पेशाब के बदन) को खाल बाहर निकाल कर पानी में रक्खो. अगर बाहर न निकल सके तो गरम पानी कमर पर धार देकर डालना चाहिये और पीने के पानी में दो तोला शोरा मिलाना चाहिये. इस के बाद ठंडी हवा से जानवर को बचाना मुनासिब है.

इस इलाज के बाद जब जानवर को आराम हो जावे तो उन चीज़ों से परहेज़ रखना चाहिये कि जिनसे बीमारी हुई थी. खाने के लिये पहिले नरम खाना, हरी घास व चोकर का दलिया वग़ैरह देना ठीक है.

बाब चौथा.

फेफड़ों की मशहूर बीमारियां.

१.–खांसी.

१. बीमारी का बयान –जब हलक़ या सांस लेने की नली में जलन या खुजली हो तो खांसी हो जाती है.

२. सबब—बारिश में भीगना, तेज़ हवा या ठंड का लगना, जुकाम का होना, ऐन सबेरे ठंडा पानी पिलाना वग़ैरह.

३. पहचान—जानवर खांसता है और उसके नाक और मुंह से कुछ पानी व बलग़म बहता है.

४. इलाज—बीमार जानवर को ठंडी हवा से बचाना, ठंड में कम्बल उढ़ाना, कपूर और गरम पानी का नाक के रास्ते भपारा देना. मामूली खांसी सिर्फ़ इसी तरक़ीब से जाती रहती है. अगर इससे बन्द न हो तो गले के नीचे आबले लानेवाले (Counter irritants) तेल की मालिश करनी चाहिये.

नुस्ख़ा तेल आबले लानेवाले का.

सरसों का तेल दस तोला, जमालगोटे का तेल एक तोला. दोनों को मिलाकर सारी छाती के ऊपर मलो, अगर यह दवा न मिले तो राई जरूरत के मुवाफ़िक़ लेकर और ठंडे पानी में घोंटकर उसका लेप करो या खूब गरम पानी से छाती को सेको.

नुस्ख़ा पिलाने का.

दो तोले कल्मी शोरा, दस या बारह सेर ठंडे पानी में घोलकर सुबह पिलाओ, इसी तरह शाम को पिलाओ. सिवाय इसके नीचे लिखा हुआ नुस्ख़ा सुबह और शाम, शोरे के पानी पिलाने के घंटाभर पीछे या घंटाभर पहिले दो.

नौसादर एक तोला, क़लमी शोरा एक तोला, हींग दो माशे, अकव्वे की जड़ की छाल छै माशे, ईसबग़ोल के आध सेर लुआब में सब चीज़ों को बारीक करके मिलाकर पिलाओ.

२.—कनार (Catarrh).

१. बीमारी का बयान—कनार ज़ुकाम को कहते हैं. इसमें नाक की झिल्ली पर वरम आ जाता है.

२. सबब—ठंड का लगना, बरसात का भीगना वग़ैरह.

३. पहचान—जानवर की नाक से कुछ रुतूबत बहती है और जानवर खांसता है.

४. इलाज—ठंड से बचाना, कम्बल उढ़ाना, नाक को भपारा देना और गले को सेंकना, पीने के पानी में दो तोला क़लमी शोरा दिन में दो दफ़े पिलाना.

अगर इससे आराम होता हुआ न मालूम हो तो वह नुस्ख़ा जो खांसी के इलाज में लिखा है उसे दो. (देखो सफ़ा नंबर ३२.)

३. निमोनिया यानी फेफड़े की बीमारी.

(Pneumonia).

१. बीमारी का बयान—निमोनिया उस बीमारी को कहते हैं जिसमें फेफड़ों पर वरम आजाता है.

२. सबब—गर्मी में एक दम ठंड का लग जाना, पानी पीते वक़्त फेफड़े में पानी का चला जाना, फेफड़े में चोट का लगना, खांसी का बढ़ जाना वग़ैरह.

३. पहचान— जानवर सुस्त रहता है, जब ज़्यादा बीमार होता है तो खाना बिलकुल नहीं खाता, उसका रुआं फूला हुआ होता है, टांगें छितराई हुई होती हैं, मुंह और बदन पर मक्खियां लिपटी हुई होती हैं, जानवर गर्दन सीधी करके हवा के रुख की तरफ़ खड़ा होता है, खांसी होती है, नाक की झिल्ली लाल होजाती है, और बुखार बहुत रहता है. नाक से जो पानी बहता है वह लाल रंग का होता है.

४. इलाज—थान या मकान को बदलना, ठंड और सीड़ से बचाना, ऐसे साफ व हवादार सूखे थान में रखना जहां बहुत तेज़ हवा न हो, कम्बल उढ़ाना, गरम पानी का हुकना देना, दोनों तरफ़ की पसलियों पर गरम पानी या गरम ईंट या गरम पत्थर से सेंक करना. इसके बाद छाती को हाथ से मलना, बाद इसके कड़वा तेल तीन हिस्से, तारपीन का तेल एक हिस्सा, दोनों को मिलाकर मलना. पिलाने के लिये यह नुस्खा फ़ायदेमन्द है:—

नुस्खा पिलाने का.

क़लमी शोरा छै माशे, कपूर तीन माशे, धतूरे के पिसे हुए बीज छै माशे, देसी शराब आधपाव, मुलेठी का जोशाँदा (काढा) आध सेर. इन सब दवाइयों को हर दफ़े मिलाके दिन में दो दफ़े पिलाओ और कपूर और गरम पानी का भपारा नाक के रास्ते दो.

नुस्खा खिलाने का.

गेहूं का आटा आधसेर, और अलसी पावभर. दोनों को मिलाकर सेरभर पानी में डालकर आग पर पकालो और सेरभर दूध मिलाकर उसमें आधपाव गुड़ मिलाओ और इसको तीन दफ़े दिन में पिलाओ. पीने के पानी में दो तोले शोरा हर दफ़े मिलाकर दो दफ़े दिन में पिलाओ.

बाब पांचवां.

१.—कमज़ोरी.

१. बीमारी का बयान—खून के पतले पड़जाने की वजह से ताक़त के कम हो जाने को कमज़ोरी कहते हैं.

२. सबब—हाज़मे की खराबी से और बहुत दिनों से रही हुई बीमारी में कम व खराब खुराक के मिलने से यह बीमारी हो जाती है.

पहचान—दुबलापन व सुस्ती, भूक की कमी, बे क़ायदे खाना खाना, बदहज़मी की शिकायत, आंख व नाक की अन्दरूनी (भीतरी) झिल्ली का फीके रंग का हो जाना.

इलाज—जिस बीमारी से कमज़ोरी हुई हो पहिले उसीका इलाज किया जावे. अगर उसकी खुराक व हिफ़ाज़त में भूल है तो अच्छी ताक़त देनेवाली खुराक खाने को देनी चाहिये, मगर एकदम अच्छा खाना न देना चाहिये, नहीं तो और भी बुराई होती है. हर रोज़ दोनों वक्त दाने में खाने का नमक उतना ही मिलाया जावे कि जितने की ज़रूरत हो. अगर आंतों में मवाद जमा हो तो एक जुल्लाब देना चाहिये.

नुस्खा जुल्लाब. अंडी का तेल आध पाव, मीठा तेल पावभर, दोनों को मिलाकर पिलाओ. दस्त आने पर जानवर को हल्का खाना दो जैसे हरी घास, दलिया वग़ैरह, और थोड़े रोज़ तक यह नुस्खा भी देना चाहिये:—

नुस्खा ताकत आने का. पिसा हुआ कुचला दो तोला, पिसा हुआ चिरायता आध पाव, हीरा क़सीस चार तोला, गन्धक एक छटांक, नमक पावभर. सबको कूटकर मिलालो उसमें से एक छटांक चूर को लेकर चने के आटे में मिलाकर गोली बनाओ. इस गोली को दिन में एक दफ़े देना चाहिये. इसे दाने के साथ भी दे सकते हैं.

२.—नकसीर Bleeding from the nostrils.

१. बीमारी का बयान—नकसीर उस बीमारी को कहते हैं जिसमें जानवर की नाक से किसी सबब से खून निकलता है.

ऐनीमियां याने कमज़ोरी का बीमार जानवर–दुबला व सुस्त ।

चित्रशाला प्रेस, पूना ।

२. सबब—यह बीमारी जानवरों में खासकर जोंक लगजाने के सबब से हो जाती है. घोड़े की नाक में भी जोंक अकसर लग जाती है. कभी सर या चेहरे पर चोट लगने से या तेज धूप में रहने से भी खून निकल आता है.

३. पहचान—जानवर की नाक से खून बहता है.

४. इलाज—नाक को अच्छी तरह नथने खोलकर देखो. अगर जोंक लगी हो तो उसको छुड़ा देना चाहिये. अगर न छूट सके तो एक बरतन में सूखी मिट्टी डालकर उसमें पानी भरकर जानवर की नाक से लगाओ. जोंक मिट्टी की बू से उसमें आजायेगी.

अगर चोट या धूप के सबब से खून निकला हो तो सर पर ठंडा पानी डालो और नाक में फिटकिरी के पानी की पिचकारी दो. फिटकिरी (चार माशे) को आधसेर गरम पानी में मिलाओ. इसी पानी को फिटकिरी का पानी कहते हैं. इसके लिये मामूली पिचकारी चाहिये.

बाब छटा.

पट्ठों की बीमारियां.

१.—लकवा (Paralysis).

बीमारी का बयान—यह वह बीमारी है कि जिससे बदन का कोई हिस्सा सुन या बेकार हो जाता है. इस बीमारी की तासीर पट्ठों पर हुआ करती है, खासकर आधा धड़ बेकार हो जाता है.

सबब—रीढ़ या कमर पर चोट लगना. अकसर सरदी और वर्षा से कमज़ोरी होजाने के बाद भी यह बीमारी होजाती है.

पहचान—बीमार जानवर पिछली टांगों से लड़खड़ाता है. उसके जिस जगह बीमारी हो उस जगह अगर सुई चुबोई जावे तो दर्द मालूम नहीं देता.

इलाज—बीमार जानवर को घास का बिछोना बनाकर उसपर लिटाना और करवट बदलते रहना चाहिये ताकि एक करवट रहने से ज़ख़्म न हो जाय. खाने के लिये गेहूं का दलिया १ सेर, २ सेर दूध में ४ अंडे मिलाकर देना चाहिये. कमर पर सेंक व मलाई होनी चाहिये. आधी छटांक सरसों पीसकर उसमें इतना गरम पानी मिलाया जावे कि दवा लेप सरीखी गाढ़ी हो जावे. उसका लेप करो या जमालगोटे का तेल मलो. जानवर को ठंड व धूप व हवा से बिलकुल बचाना चाहिये और कम्बल उढ़ाना चाहिये. यह बीमारी लाइलाज भी है.

२.—बच्चा जनने के बाद मुर्दासा होजाना.

१. बीमारी का बयान—यह वह बीमारी है जो मादीन जानवरों को बच्चा होने के बाद हो जाती है और इसका असर भी पट्ठों पर ही होता है.

२. सबब—इस बीमारी के कई सबब बयान किये जाते हैं, मगर हाल में मालूम हुआ है कि यह बीमारी एक विष के सबब से होती है जो मादीन के थनों में पहुंच जाती है.

३. इलाज—एक हिस्सा नमक, चार हिस्से साफ ठंडा पानी लेकर अर्क़सा बनालो और इस पानी को किसी बारीक नोंक की पिचकारी के ज़रिये से थनों में पहुंचाओ.

बाब सातवां.

पांव की बीमारियां.

लंग.

१. बीमारी का बयान— लंग उस बीमारी को कहते हैं जिसमें जानवर अपनी मामूली चाल के खिलाफ़ धीरे धीरे और झटके व तकलीफ़ से पांव उठाता है.

२. सबब—इस बीमारी के बहुत सबब होते हैं, जैसे मोच का आजाना, हड्डी का टूट जाना, बेर हड्डी, चक्रावल, हड्डा, मोथरा वग़ैरह का होना.

१. मोच के सबब से लंग.

पहचान—जानवर लंग करता है और मोच के मक़ाम पर दर्द व सूजन होती है.

इलाज—जानवर को आराम देना और मोच की जगह को पहिले ठंढी पट्टी लगाकर पानी में तर रखना मुनासिब है. इस तरह दो तीन दिन पट्टी लगाकर फिर उस जगह पर खजूर के पत्ते की सूरत का दाग़ दे देना चाहिये.

२. हड्डी के टूटने के सबब से लंग.

पहचान—जानवर दर्द के सबब से बहुत मुश्किल से क़दम उठा सकता है, पैर छीछड़े की तरह लटकता हुआ मालूम होता है. अगर उस जगह को देखा जाय कि जहां से हड्डी टूटी है तो हड्डी से कुरकुर की आवाज आती है और हिलाने से हिलती हुई मालूम होती है.

इलाज—घोड़े में यह बीमारी लाइलाज है, मगर और जानवरों का इलाज हो भी जाता है. उनकी टूटी हुई हड्डी के दोनों सिरे आपस में मिलाकर उनको आस पास बांस की खुरेची (क़मची) बांधकर मज़बूत बांधना चाहिये.

जानवर को आराम देना और जहांपर वह हो वहीं पर उसको चारा वग़ैरह खिलाना चाहिये. हिलना चलना इसमें बहुत नुक़सान पहुंचाता है. इसकी एहतियात रहे.

३. बेरहड्डी, चक्रावल, हड्डा वग़ैरह होजाने से लंग.

बेरहड्डी, चक्रावल, हड्डा, वग़ैरह का इलाज व सबब यकसां हैं. पहचान में किसीक़दर फ़र्क़ है.

पहचान बेरहड्डी (Splint):-जब जानवर के अगले पैर के घुटने के नीचे की लंबी नली के भीतर की तरफ़ एक हड्डी की गांठ बन जाती है और बढ़ते बढ़ते पट्ठों तक पहुंच कर पट्ठों को दबाती है तो जानवर के पैर में दर्द होता है. उस हड्डी की गांठ को बेरहड्डी कहते हैं.

चक्रावल:- जानवर की गामछी पर रफ़्ता रफ़्ता एक हड्डी की गांठ बनकर बढ़जाती है तो उसके सबब से जानवर लंग करने लगता है. ऐसी गांठ को चक्रावल कहते हैं.

हड्डा (Spavin):-जब पिछले पांव के अन्दर की तरफ खोंच के जोड़ की हड्डियों के नीचे एक हड्डी की गांठ बन जाती है और रफ़्ता रफ़्ता बढ़कर खोंच के जोड़ में दर्द पैदा करके उसकी हरकत ठीक ठीक नहीं होने देती तो जानवर लंग करने लगता है. ऐसी हड्डी की गांठ को हड्डा कहते हैं.

सबब—ये सब बीमारियां पुश्तैनी हुआ करती हैं. बाज़ दफ़ कम उम्र में ज़्यादा मेहनत लेने से भी होजाया करती हैं.

इलाज—इन सबका इलाज दाग़ है. अगर शुरू ही में इलाज किया जावे तो आराम हो जाता है, वर्ना ये बीमारियां लाइलाज हैं.

४. चपनी की हड्डी का अपनी जगह से हट जाने से लंग.

Dislocation of hip joint.

बीमारी का बयान—वह हड्डी जो पिछले पांव में खोंच से ऊपर के जोड़ में सामने की तरफ़ होती है और हाथ फेरने से इधर उधर सरकती मालूम होती है और जिसको चपनी कहते हैं वह कभी अपनी जगह से हट जाती है. इससे जानवर लंग करने लगता है.

सबब—चोट लगने से या पांव में किसी सबब से ज़्यादा झटका आजाने से जानवर लंग करने लगता है.

ब
अ

बेर हड्डी। पैर में रोग होने से पहिले की हालत और पैर की वह हालत कि जब उसमें रोग हो।

चित्रशाला प्रेस, पूना।
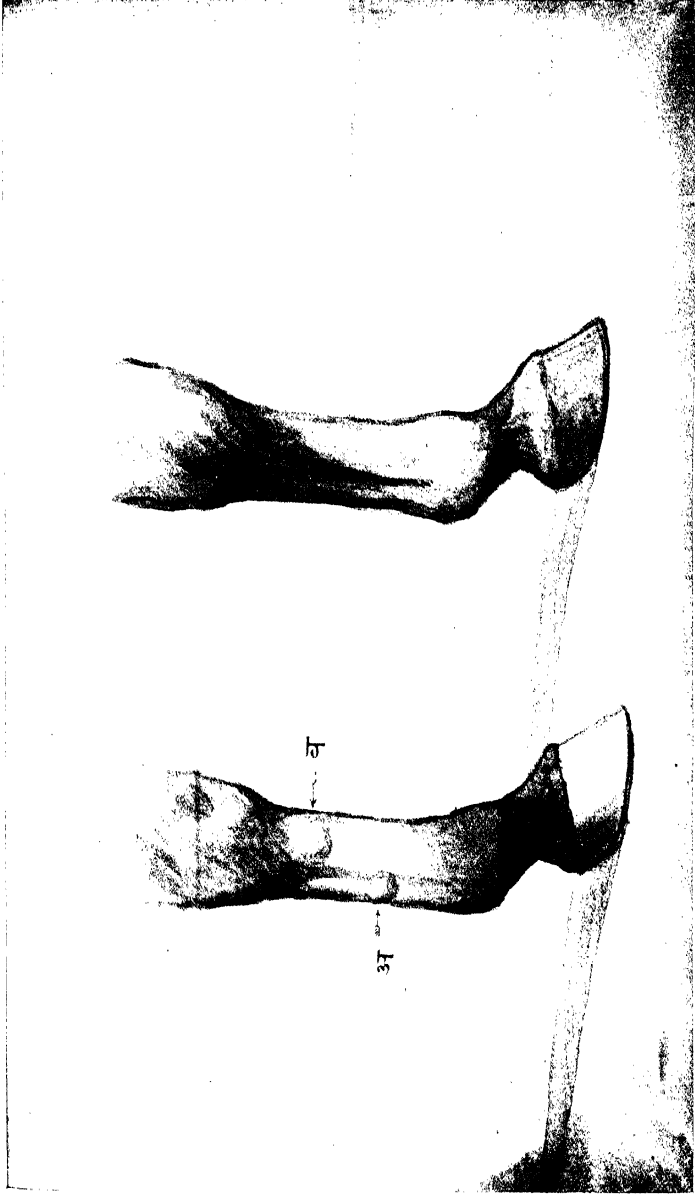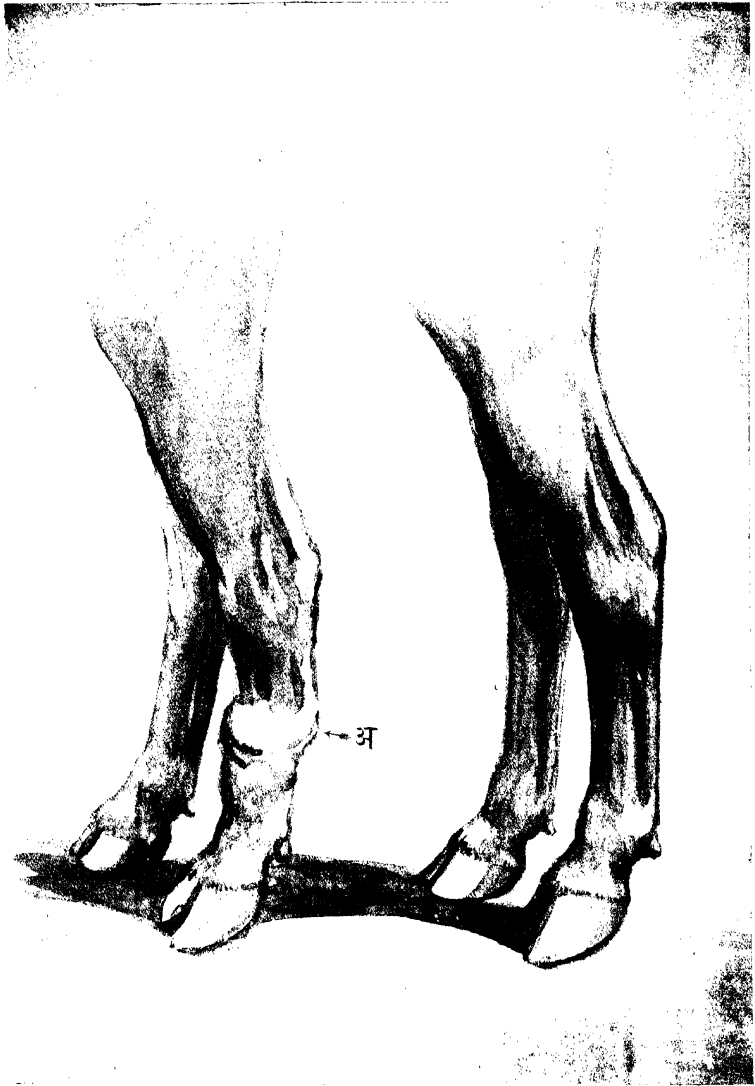
जानवर की टांग की हड्डी टूटी हुई है, जो हिलाने से हिलती हुई मालूम देती है।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

चकरावल । रोग होने से पहिले की हालत और रोग होने से पीछे की हालत ।

चित्रशाला प्रेस, पूना ।

मोथरा । रोग होने से पहिले की हालत और रोग होने के वक्त की हालत ।

चित्रशाला प्रेस, पूना ।

हड्डा रोग होने से पहिले की हालत और रोग होने के वक्त की हालत ।

चित्रशाला प्रेस, पूना ।
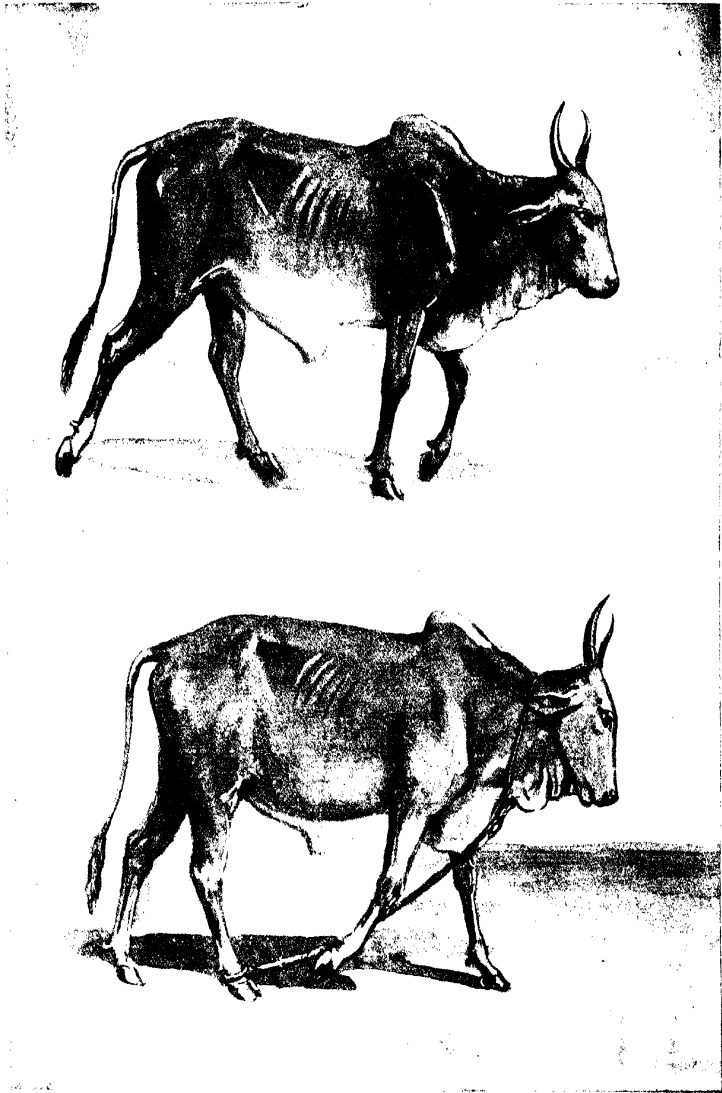
चपनी की हड्डी सरकी हुई है उसको अपनी जगह पर फिर बैठाने बाद उसे कायम रखने के लिये (ताकि वह फिर न सरक जाय) रस्सा जो पैर में बँधा हुआ है वह गले में घेरा डाल के खींच कर बांध लिया गया है। जानवर की उस समय की दशा जब हड्डी सरकी हुई है और जानवर की वह दशा जब वह बांधा गया है।

चित्रशाला प्रेस, पूना ।

पहचान--यह बीमारी अक्सर जानवरों में देखी गई है. जानवर का पांव पीछे खिंच जाता है और चलने में खुर की नोक से पैर को रगड़कर बड़ी तकलीफ़ से लंग करके चलता है.

इलाज--जानवर के जिस पांव की चपनी की हड्डी अपनी जगह से हट जाती है उस पांव की गामची (Postern) पर रस्सा मुजम्मे के तौर पर एक सिरे से बांधकर दूसरे सिरे से घोड़े की टांग को उसके मुंह की तरफ़ खड़े होके खींचना चाहिये.

जिस जगह की चपनी हट गई है उसपर हाथ रखकर हटी हुई चपनी को भीतर की तरफ़ ज़ोर से दबाना चाहिये. ऐसा करने से सरकी हुई चपनी अपनी जगह पर आजावेगी. इसके बाद हटी हुई चपनी को अपनी जगह पर क़ायम रखने के लिये वही रस्सा जो पैर से बांधा हुआ है गले में घेरा डालकर जरा खींचकर बांध देना चाहिये. इससे चपनी हटने नहीं पावेगी. इसके पीछे चपनी की जगह पर खौलते हुए पानी के छींटे देने चाहिये, ताकि उस जगह की खाल लाल हो जावे और उसपर सूजन आजावे. जहांतक मुमकिन हो चौबीस घंटे तक पैर को हिलने न दे. बाद इसके पैर और गले पर बंधा हुआ रस्सा खोलदे. जबतक सूजन अपने आप उतर न जावे तबतक जानवर को थान से बाहर न निकालना चाहिये.

बाब आठवां.

उन बीमारियों के बयान में जो हैवानात के पेशाब करने की जगह से व बच्चा पैदा होने की जगह से तअल्लुक़ रखती हैं.

१.– पेशाब का बंद हो जाना.

१. बीमारी का बयान—इस बीमारी में जानवर का पेशाब बंद या मिकदार में कम होता है.

२. सबब—यह बीमारी कई सबबों से हो सकती है, मगर खास इसके दो सबब हैं. कुरकुरी की बीमारी के सबब से या पेशाब की जगह की नीचे लटकती हुई खाल में मैल वग़ैरह के जमा होजाने से.

३. पहचान—बीमार जानवर पेशाब नहीं करता है, बेचैन होता है, पिछली टांगें बार बार बदलता और दुम मारता है, बार बार कूंख को देखता है और उठता बैठता रहता है.

४. इलाज—अगर पेशाब कुरकुरी के सबब से बंद हो तो वह तदबीर करनी चाहिये जो कुरकुरी में पेशाब खोलने के लिये बताई गई है (देखो बाब ३.) और अगर मैल जमा होने के सबब पेशाब बंद हो तो पेशाब की जगह की खाल में उंगली डालकर उसके मैल को साबुन व गरम पानी से धोके निकाल देना चाहिये.

२.– मादीन की पेशाब की जगह (कमल) का लौट जाना.

१. बीमारी का बयान—यह वह बीमारी है जिसमें बच्चेदानी या पेशाब की जगह भीतर से निकलकर बाहर लौट पड़ती है.

२. सबब—अगर बच्चा तकलीफ़ से और देर में हो तो यह बीमारी अक्सर पैदा हो जाती है.

३. पहचान — बच्चेदानी पेशाब की जगह से बाहर लटकी हुई दिखाई देती है.

४. इलाज — एक सेर गरम पानी में एक तोला पिसी हुई फिटकिरी डाल कर पहिले बच्चेदानी को उससे खूब धोना चाहिये और जो कुछ उसमें मैलापन हो उसको हाथ से साफ़ कर देना चाहिये. इसके बाद अपने हाथों पर और बच्चेदानी पर तेल चुपड़ कर उसको अन्दर उसकी जगह पर वापिस करना चाहिये. फिर उसी फिटकिरी के गरम पानी को भीतर पेशाब की जगह में पिचकारी के ज़रिये पहुंचाना चाहिये ताकि अन्दर से खूब साफ़ होजावे. इस अर्क़ (पानी) से * बच्चेदानी पेशाब की जगह से फिर बाहर न निकलेगी. फिर अगर ज़रूरत समझी जाये तो पेशाब की जगह के मुंह पर एक रस्सी का छींका या बेद का कुंडल बनाकर लगा देना चाहिये. जानवर को ऐसी जगह पर खड़ा रखना चाहिये कि उसका पिछला धड़ ऊंचा रहे. खाने के वास्ते हल्की खुराक, नरम, हरी चरी, घास, दलिया, खल, वग़ैरह देना चाहिये.

३.—औं की सोज़िश (जलन.)

(Inflammation of the udder.)

१. बीमारी का बयान — जलन औं वह बीमारी है कि जिसमें औं में सूजन हो जाती है.

सबब—चोट लगना, देर तक दूध न निकालना वग़ैरह.

पहचान — औं पर सूजन, जलन, दर्द, और औं का तना हुआ रहना हाथ लगाने से मालूम देता है, दूध की कमी या बन्द होजाना, बुखार, खाने जुगालने में कमी, कभी दूध में खून व पीप का आजाना.

इलाज —औं को सेंकना, दूध से बिलकुल ख़ाली करना, तेल तारपीन की औं पर मलाई करना, खाने के लिये हल्का और थोड़ा खाना देना, चोकर या अलसी की चाय या चांवलों का मांड देना. पीने को यह नुसखा देना चाहियेः—

* यह काम मुश्किल है. इसको जानवरों के डाक्टर से सीखने के बाद करे, बग़ैर सीखे न करना चाहिये.

शोरा एक तोला, देसी शराब एक छटांक, नौसादर एक तोला, उबाला हुआ चिरायते का काढ़ा * एक छटांक. सबको एक सेर ठंडे पानी में हर दफ़े मिलाकर दो दफ़े दिन में दे. आंके नीचे थैली लगादे और सहारे के लिये पट्टी से उसको बांध दे.

* **चिरायते का काढ़ा बनाने की तरकीब**—डेढ़ सेर खौलते हुए पानी में एक छटांक चिरायता डालके पकाये और जब पानी पकके सवा सेर रह जाय तब उसे उतार ले.

——

बाब नवां.

घावों के मुतअल्लिक़.

१. बीमारी का बयान—घाव उस ज़ख़्म को कहते हैं कि जिससे ख़ून या पीप निकलता है.

२. सबब—घाव हमेशा चोट लगने से हो जाते हैं, और कभी भीतर की खराबी के सबब बदन में फोड़े फुंसियां निकल आती हैं, और वे भी फूट कर घाव बना देती हैं.

३. पहचान—ज़ख़्म की मौजूदगी, ख़ून और पीप का निकलना.

४. इलाज—घाव का सब से फ़ायदेमन्द इलाज यह है कि उसको साफ़ रक्खा जावे. गन्दा रहने से घाव खराब होजाता है. जब किसी जगह घाव हो जावे तो उसको पहिले गरम पानी से ख़ूब धोना चाहिये. इसके बाद नीलातूतिया २ माशे आध सेर पानी में मिलाकर घाव को धोओ, या नीम के पानी से घाव को धोओ. फिर यह मरहम (मल्हम) लगाओ.

नुस्खा मरहम (मल्हम.)

मोम तीन तोला, राल तीन तोला, गन्दाविरोजा एक छटांक, तेल एक छटांक और कपूर तीन माशे. राल को पीसकर गन्दाविरोज़े में आंच पर पिघला-लो. इसके बाद पिसे हुए कपूर और तेल को मिलाकर लकड़ी से चलाओ. जब ठंडा होजावे तो उतारकर रखलो और ज़रूरत के मुवाफ़िक़ उसमें से मरहम को लेके घाव पर लगाते रहो.

इस बात की एहतियात रक्खो कि ज़ख़्म पर मक्खियां और कीड़े न बैठने पावें.

५. जो घाव आग से जलकर हो आवे उसमें चूने का पानी एक छटांक और सरसों का तेल एक छटांक (दोनों को) मिलाकर लगाने से बहुत फ़ायदा होगा.

चूने का पानी बनाने की तरकीब.

चूना एक तोला, साफ़ पानी एक सेर. दोनों को मिलाकर रखदे जब चूना बैठ जाये तो पानी निथार ले.

६. जब घाव सींग टूटने से हो तो उसमें बहुत एहतियात करनी चाहिये. यह जल्दी अच्छा नहीं होता. कभी तो बैल आपस में लड़कर सींग तोड़ डालते हैं. कभी चोट आने से सींग टूट जाता है. बाज़ वक़्त ऐसा होता है कि सींग रस्सी बांधने से कट जाता है.

अगर चोट से सींग टूट जावे तो उससे बहुत ख़ून बहता है. पहिले ख़ून बन्द करने की तदबीरें करनी चाहियें. अच्छी तदबीर ख़ून बन्द करने की यह है कि सन या कपड़े की एक गद्दी बनाकर उसपर बहुतसा बारीक कोयले का चूरा छिड़ककर सींग के घाव पर पट्टी कसकर बांध दे. दिनभर पट्टी लगी रहे. इससे ख़ून बन्द हो जावेगा. बाद को पट्टी उतारकर घाव को ठंडे पानी से या सुहागे के पानी * से धो डाले. फिर उस घाव पर ऊपर बताई हुई मरहम (मलम) कपड़े पर फैलाकर लगाये और दूसरी नई साफ़ पट्टी बांधे.

७. जब घाव गर्दन में जुवे वग़ैरह की रगड़ के सबब से होजाता है तो इसमें भी एहतियात चाहिये वर्ना यह ख़राब होजाता है. पहिले जानवर को आराम दे और घाव को रगड़ से बचाये और पिसी फिटकिरी के पानी † से एक, दो या तीन दफ़े धो दिया करे और ऊपर लिखी हुई मरहम उसपर लगावे.

८. बरसाती का घाव इन सब घावों से बड़ा हटीला और ख़राब होता है और यह किसी इलाज से अच्छा नहीं होता. बाद मौसम बरसात के खुदबखुद अच्छा हो जाता है और कभी नहीं भी होता है. बाज़ लोगों का यह ख़्याल है कि यह पुश्तैनी होता है, और कोई कहते हैं कि हर घाव का अगर बचाव न किया जावे तो बरसाती का घाव हो जाता है. इसका

---

* सुहागे के पानी के बनाने की तरकीब—एक तोला पिसे हुए सुहागे के साथ पच्चीस तोले पानी मिलालेने से सुहागे का पानी बनता है.

† फिटकिरी के पानी बनाने की तरकीब—एक तोले पिसी हुई फिटकिरी के साथ एक सेर ठंडा पानी मिलाने से फिटकिरी का पानी बनता है.

इलाज यह है कि बरसात के घावों में जिसक़दर कड़ा बदगोश्त और छीछड़े हों उन सबको नश्तर से अच्छी तरह से छील * लिया जावे या काट लिया जावे और बाद इसके लोहा गरमकर उस जगह को दाग़ दिया जावे. लेकिन इससे पहिले इतना ख़्याल ज़रूर रहे कि गोश्त के तन्दुरुस्त हिस्से को किसी तरह का नुक़्सान न पहुंचे. बाद इसके हर रोज़ उस ज़ख़्म को तूतिये के पानी से धोता रहे. वह इस तरह बनाना चाहिये:—तूतिया एक तोला, पानी एक सेर. दोनों को मिलाओ. इससे धोने के बाद उस पर वह मरहम (मल्हम) लगाओ कि जिसका ज़िक्र घाव के बयान में किया गया है (देखो सफ़ा ४३) और उसपर रुई व पट्टी बांधो ताकि मक्खियां बैठकर ख़राब न करें.

---

* यह काम न आता हो तो इसे सीखके करे वर्ना घाव बिगड़ने का एहतमाल है.

बाब दसवां.

बीमारियां आंखों की.

बीमारियां आंखों की—आंखों की कई बीमारियां होती हैं जिनमें आंख का दुखना एक ऐसी बीमारी है कि जिसका इलाज सहल है, लेकिन और बीमारियां ऐसी हैं कि जिनका इलाज मुश्किल से होता है और बाज उनमें से ऐसी भी होती हैं जिनका हो भी नहीं सकता. इसवास्ते इस बाब में सिर्फ आशोब चश्म (आंख दुखने) के बाबत कुछ लिखा जाता है:—

बीमारी का बयान—आंखें लाल हो जाती हैं और बहुत दुखती हैं.

सबब—चोट लगना, किसी चीज का आंख में गिरजाना, मक्खियों का काटना.

पहचान—आंख से हर वक्त पानी जारी रहता है, डेला सुर्ख हो जाता है और पपोटे सूज के चिपचिमाते हैं.

इलाज—अव्वल आंख को देखे कि उसमें कोई चीज या ज़ख़्म तो नहीं है, अगर कोई चीज हो तो उसको साफ कपड़े या पर से निकालदे, और अगर ज़ख़्म हो तो आंख को रोशनी से बचाने के लिये उसपर पट्टी लगावे और पट्टी को नीचे लिखे हुए पानी से तर रक्खे.

नुस्ख़ा पानी फिटकिरी.

फिटकिरी छै माशे को पावभर साफ गरम पानी के साथ मिलावे.

नुस्ख़ा पानी सुहागा.

सुहागा छै माशे, रसौत छै माशे, गरम पानी तीन पाव मिलाले.

बाब ग्यारहवां.

हमल रहना.

अक्सर देखा जाता है कि ज़मींदार लोग घोड़ी के अय्याम अलंग के शनाख़्त करने में धोखा खाजाते हैं, और वे और दिनों में घोड़ी को सांड से मिलाकर हमल न रहने का इल्ज़ाम सांड को देते हैं. इस वास्ते यहां यह भी बताया जाता है कि अगर बग़ैर गरमाई हुई घोड़ी को सांड से मिलाया जाय तो घोड़ी नहीं ठहर सकती. अलंग का दौरा साल के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में मालूम हो जाता है; चुनांचे घोड़ी मौसम सर्दी और गर्मी में गरमाती है और उसका वेग (ज़ोर) सिर्फ़ दो से चार रोज़ तक रहता है, और तीन या चार हफ़्ते के बाद फिर उसे चाह होती है. इसी तरह गाय गरमाती है. पस घोड़ी या गाय को इन्हीं चार रोज़ के अन्दर सांड से मिला देना चाहिये, नहीं तो दूसरे दौरे का इन्तज़ार करना चाहिये. घोड़ी बाद ग्याभन होने के अमूमन ११ महीने में बच्चा देती है, और गायें नौ महीने के क़रीब बच्चा देती हैं. अगर बच्चा होने के आठ नौ रोज़ बाद घोड़ी को सांड से फिर मिलाया जाय तो घोड़ी ज़रूर हामला हो जाती है.

बाब बारवां.

जानवरों के पेट के कीड़े (किरम).

अक्सर घोड़े, गाय, बैल, भेड़, बकरी वग़ैरह घरेलू जानवरों की छोटी आंतों में कीड़े रहते हैं.

एक क़िस्म गोल और लम्बे कीड़ों की होती है, जिनको केंचुवा (Round Worm) कहते हैं. दूसरी क़िस्म लम्बे फ़ीते की तरह कीड़ों की होती है जिसे पटेले, पटार या पतेसे (Tape Worm) कहते हैं. तीसरी क़िस्म किरम (Bots) की होती है.

किरम की पैदायश इसतरह पर होती है, याने गर्मियों के अखीर में एक क़िस्म की मक्खी (Gadfly) खास करके घोड़ों, गाय, बैल, भेड़, बकरी वैग़रह की आगे की टांगों के नीचे के हिस्सों पर या बदन के किसी और हिस्से पर बैठ के अंडे देती है, और जब वे जानवर अंडेवाली जगहों को किसी वजह से चाटते हैं, तो ज़बान की नमी के सबब अंडे फूट जाते हैं और उनमें से बच्चे निकल आते हैं, और वे ख़ुराक के साथ जानवरों के मेदे में पहुंचकर अंतड़ियों में चिपट जाते हैं, और जब वे वहां अच्छी तरह पल जाते हैं तो उनका लीद के साथ निकलना शुरू होता है. इनके पेट में कसरत से रहने के सबब से जानवरों के पेट में बड़ा दर्द मिस्ल कुरकुरी के होता है.

इन सब कीड़ों के निकालने के लिये इलाज नीचे लिखा जाता है:—

(१) दो रोज़ तक जानवर को सिवाय घास के और कुछ न देना चाहिये. इसके बाद बारह घंटे तक घास भी न देनी चाहिये. फिर अलस्सुवह आधी बोतल अलसी के तेल के साथ चार तोले तारपीन तेल को जानवर को पिलाना चाहिये. इससे पेट साफ़ हो जायगा. अगर इससे फ़ायदा मालूम न हो तो एक हफ़्ते के बाद इस दवा को फिर दो; या

(२) नीम की खूब बारीक़ पिसी हुई कोंपल को सेरभर दही, आधसेर अलसी के तेल, आधी छटांक पिसे हुए ख़ास पापड़े (ढाक के बीज) के साथ मिलाकर सुबह जानवर को देना चाहिये

इससे कीड़े गिरजाते हैं. अगर वे सब निकल जावें तो दवा फिर देने की ज़रूरत नहीं रहती. अगर वे न गिरें तो एक हफ़्ते के बाद फिर इस दवा को देना चाहिये. अगर इससे भी कीड़े न निकलें तो एक हफ़्ते के बाद फिर यही इलाज करना चाहिये; या

(३) लाहौरी नमक, खारी नमक, काला नमक, सांभर नमक इकट्ठा करके पीस लेना चाहिये. जब सुबह दाना दिया जावे तो इस चूरन में से दो छटांक चूरन सुबह हर रोज़ दिया जावे. जब कीड़ों का गिरना बंद होजावे तो इसे देना भी बंद करदेना चाहिये; या

(४) राई पावभर, लाहौरी नमक पावभर, सांभर नमक पावभर, काला नमक पावभर, खारी नमक पावभर, लाल मिर्च के बीज पावभर, सोंठ पावभर, कचरी पावभर, अजवायन पावभर, सेंजने की छाल पावभर, आंवला पावभर, हड़ पावभर, हींग दो तोले, बायबिड़ंग छटांकभर, ख़ास पापड़ा आधपाव बारीक पीसकर तय्यार करलेना चाहिये.

फिर एक मटके में दस सेर छांछ भरके उसमें ये सब चीज़ें डाल देनी चाहियें, इसके बाद मटके को बन्द करदेना चाहिये. आठ रोज़ पीछे जब ये चीज़ें अच्छी तरह सड़ जावें तो इस दवा में से पावभर दवा निकालके शाम को दाने के बाद जानवर को पिला देनी चाहिये.

यह दवा बराबर तीन हफ़्ते तक दीजावे, लेकिन अगर कीड़ों का गिरना बन्द होजावे तो दवा फिर न देनी चाहिये.

जानवरों के इलाज करने वाले को यह याद रखना चाहिये कि जब भेड़ या बकरी का इलाज करना हो तो ऊपर लिखी हुई मिक़दारों का सिर्फ़ चौथा हिस्सा उन्हें दिया जावे.